मध्यप्रदेश शासन
वन विभाग

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

जुलाई-सितंबर, 2018

RNI Reference No : 1322876 • Title Code : MPHIN34795 • Year : 2 • Edition : 8

MADHYA PRADESH VANANCHAL SANDESH

July-September, 2018

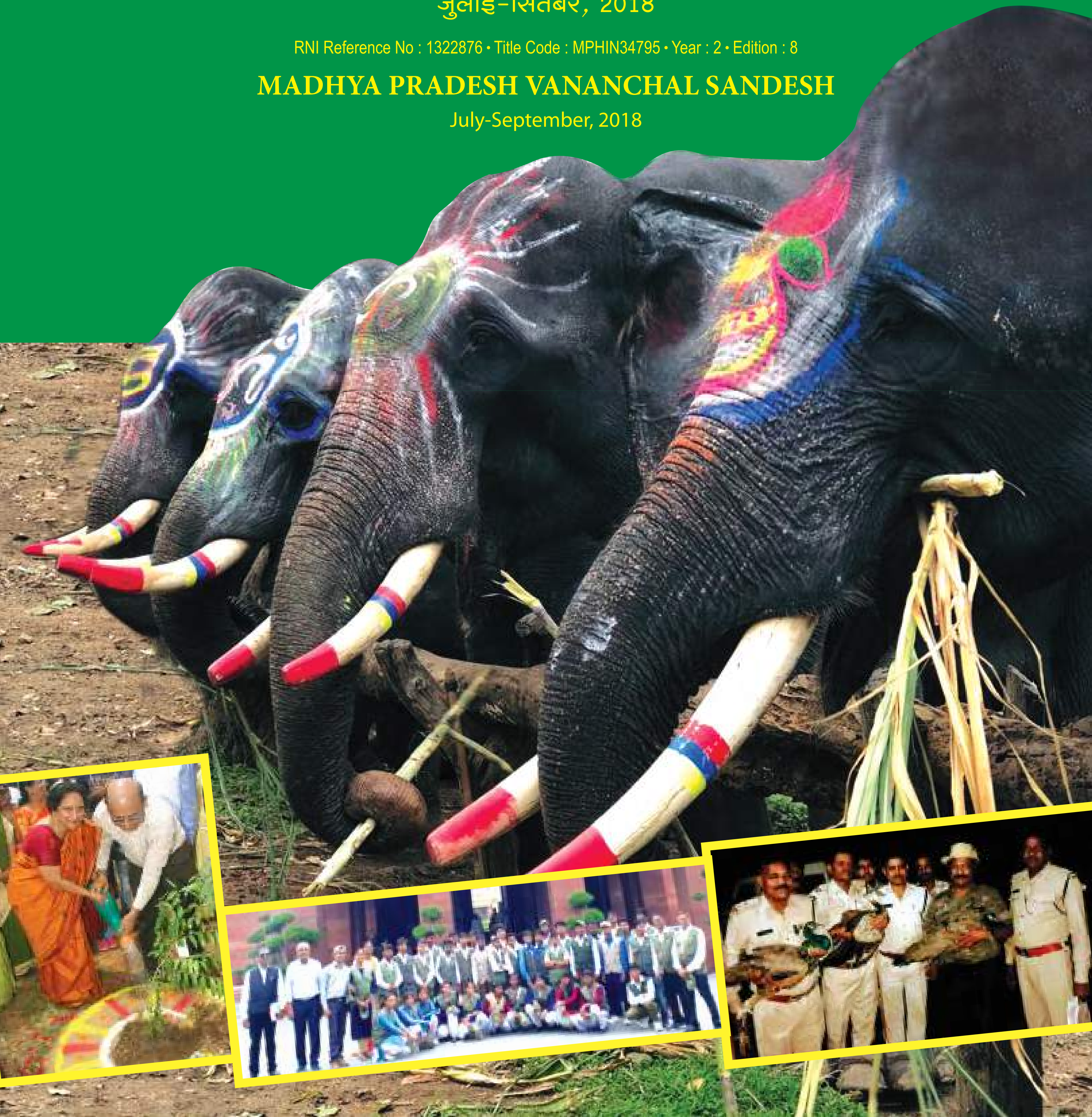

सार्थक झा

Patron :

M.K. Sapra
Principal Chief Conservator of Forests
(HOFF), Satpura Bhawan, Bhopal

Editorial Board :

S.K. Mandal
Principal Chief Conservator of Forests
(Research, Extension and Lok Vaniki)

Dr. Abhay Kumar Patil
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Complaints and Redressal)

Alok Kumar
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Wildlife)

Puskar Singh
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Development)

Sameeta Rajora
Chief Conservator of Forests
Director Van Vihar

S.P. Jain
DCF

B.K. Dhar
Prachar Adhikari

Editor :

Dr. P.C. Dubey
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Research, Extension and Lok Vaniki)

Prachar Prasar Prakosth Team :

Neeraj Gautam, Coordinator
Diwakar Pandit, Cordinator

Contact :

Prachar Prasar Prakosth, Room no. 140,
Satpura Bhawan, Bhopal
Email : dcfpracharprasar@mp.gov.in
Contact : 07552524293

Owner & Publisher :

Prachar Prasar Prakosth (M.P. F.D.)
Printed by Madhya Pradesh Madhyam Bhopal

The views expressed in various articles belong to the authors of the article. Madhya Pradesh Forest Department may not agree with the views expressed by authors and will not be responsible for the correctness of the article. Madhya Pradesh Forest Department is not responsible for any liability arising out of context/text of the article published in this magazine.

No part of this magazine can be reproduced and published without the consent of the publisher of Madhya Pradesh Vananchal Sandesh. All legal disputes will come under the jurisdiction of Bhopal, Madhya Pradesh.

इस बार के अंक में

03

14

18

01
राष्ट्रीय वन वन शहीद दिवस

03
अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस

07
अनुसंधान विस्तार वृत्तों की रोपणियों में नवाचार

07 वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन

07 वर्मीकम्पोस्ट तैयार करने की विधि

07 बॉयो फर्टिलाईजर /जैविक खाद/ जैविक कीटनाशक का प्रयोग

08 रासायनिक खाद से जैविक खाद की ओर

08 जैव उर्वरक से लाभ :

08 जैव उर्वरक के प्रकार

11
जीवामृत

11 सावधानियाँ

11 भविष्य की रणनीति

13
वन्य प्राणी शाखा की गतिविधियां

14 मानव एवं वन्य प्राणी द्वन्द्व – सीधी में जंगली हाथियों का बचाव

17
वन विहार की गतिविधियाँ

17 वयोवृद्ध मादा सिंह जमुना ने औसत उम्र से अधिक समय वन विहार में बिताया

17 पहली बार वन विहार में दो चौसिंगा का जन्म

18 वन विहार की वयोवृद्ध खुशमिजाज मादा सिंह शिवानी

18 वन विहार में लाया गया एल्बिनो कोबरा सांप

19 तेंदुआ रेस्क्यू कार्यवाही विवरण

20 राष्ट्रीय वन शहीद दिवस

21
मुकुन्दपुर व्हाइट टाइगर सफारी

24 हाथियों का हेल्थ चेकअप, खिलाये गये मीठे पकवान

25
राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

25 मध्यप्रदेश के विभिन्न वन क्षेत्रों में कार्बन संचयन पर अध्ययन

26 लाख कीट प्रजातियों का संरक्षण

27 अनुसंधान एवं विस्तार वृत्तों के माध्यम से संचालित लघु अनुसंधान कार्यों पर तकनीकी सलाह एवं मार्गदर्शन

27 राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में बैम्बूसेटम की स्थापना

28
प्रशंसा एवं पारितोषिक

28 प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री मनोज कुमार सपरा द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण एवं वनकर्मियों के सराहनीय योगदान के लिए सम्मान

29 प्रशस्ति पत्र एवं पदक

30 पदोन्नति एवं सेवानिवृत्त

32
विभागीय समाचार एवं गतिविधियां

34
अनुकरणीय पहल

34 बुंदेलखंड क्षेत्र में ट्री एम्बुलेंस सेवा की शुरूआत

21

25

28

34

35

34 बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व की पतौर रेंज में मिले थे दो अव्यस्क शावक, गोद की मां का दूध पीकर बड़े हुए।

35
हरित साहित्य

35 वृक्ष गंगा रैली, सागर वन विस्तार, गायत्री पीठ सदस्यों के साथ

36 मानसरोवर सूख गया तो...।

37
विविधा

37 ओम वैली, भोपाल

38 पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधारोपण–दम्पत्ति वन महोत्सव

39–40
अखबारों के आइने से

41
फारेस्टर क्रिएटिविटी

41 कुसुम बीज उपचारण अंकुरण एवं पौध तैयारी एक प्रयोग एवं सफलता राममलिन, वनपाल अनुसंधान विस्तार, रीवा द्वारा

42
सतत् विकास लक्ष्य–विजन 2030

41

संपादकीय

वनांचल संदेश के प्रस्तुत अंक में दी गई प्रस्तुतियाँ कई मायने में एक नयेपन का समावेश है। अधिनस्थ कर्मचारियों द्वारा किये गये प्रयास को विशेष संदर्भो में देखने की आवश्यकता है। क्षेत्रीय, अनुसंधान एवं विस्तार, वन्यप्राणी शाखाओं में पदस्थ वन कर्मचारियों के द्वारा किये गये प्रयासों की प्रस्तुति वनांचल संदेश का प्रमुख उद्वेष्य भी है। दम्पत्ति वन महोत्सव, पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सुन्दर प्रयास है। सतत् विकास सम्बन्धी लेख विकास की नई रूप–रेखा का एक दृष्टि पक्ष है। वन्य प्राणी शाखा द्वारा किये गए नये–नये प्रयोग एवं प्रयास एक सराहनीय कदम हैं। अनुसंधान एवं विस्तार शाखा द्वारा जैविक विधि का उपयोग कर पौध तैयारी एक अच्छी पहल है। विभाग के बढ़ते कदम, जन–जन तक पहुँचाने के प्रयास से इस अंक में विशेष रूप से दर्शित हुए हैं। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ...

डॉ. पी.सी दुबे

राष्ट्रीय वन वन शहीद दिवस–11 सितम्बर

वनकर्मियों के बलिदान का सम्मान : वन शहीद दिवस (11 सितम्बर)

वन और वन्य जीवों के सरंक्षण में बलिदान देने वाले वनकर्मियों की याद को चिरस्थायी बनाने के लिए हर साल 11 सितम्बर को वन शहीद दिवस मनाया जाता है।इस साल भी वन शहीद दिवस पर शहीदों के परिवार का सम्मान और रक्तदान शिविर का आयोजन चार इमली स्थित फारेस्ट रेस्ट हाउस में किया गया । देश में सबसे ज्यादा वन मध्यप्रदेश में है प्रदेश में वनकर्मी वन क्षेत्रों में अत्यंत कठिन परिस्थियों में भी अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हैं। अब तक प्रदेश में लगभग 50 से अधिक वन अधिकारी और कर्मचारी वन और वन्य प्राणियों की रक्षा करते हुए शहीद हो चुके हैं जिसके लिए उनके बलिदान को याद करना जरूरी हो जाता है। राष्ट्रीय वन शहीद दिवस पर श्री के.के. सिंह अपर मुख्य सचिव, वन म.प्र. शासन ने शहीद वन कर्मियों के परिजनों को शॉल–श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर प्रधान मुख्य वन सरंक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री मनोज कुमार सपरा ने कहा कि भोपाल में निर्माणाधीन नवीन वन भवन में वन शहीदों कि याद में स्मारक बनाया जायेगा। इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव द्वारा एक स्मारिका का विमोचन किया गया।

श्री के के सिंह अपर मुख्य सचिव, वन मध्यप्रदेश शासन शहीद के परिजन को शॉल भेंट करते हुए

श्री के.के. सिंह, अपर मुख्य सचिव वन, श्री मनोज कुमार सपरा प्रधान मुख्य वन सरंक्षक एवं वन बल प्रमुख म.प्र.,श्री शहबाज़ अहमद , प्रधान मुख्य वन सरंक्षक (वन्यप्राणी) एवं श्री एस.पी. तिवारी, मुख्य वन सरंक्षक भोपाल वृत्त एवं शहीदों के परिजन स्मारिका का विमोचन करते हुए।

शहीद दिवस के अवसर पर उपस्थित शहीद परिवारों के सदस्य, मुख्य अतिथि एवं अधिकारीगण

शहीद दिवस के अवसर पर श्री मनोज कुमार सपरा, प्रधान मुख्य वन सरंक्षक एवं वन बल प्रमुख म.प्र. रक्तदान करते हुए

अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस पन्ना टाइगर रिजर्व में संपन्न

पन्ना टाइगर रिजर्व हर वर्ष 29 जुलाई को अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस का आयोजन करता आ रहा है।

इस वर्ष आयोजित कार्यक्रम में आसपास के ग्रामों के स्कूल में अध्ययनरत सैकड़ों छात्र–छात्राओं ने भाग लिया तथा बच्चों को क्विज प्रतियोगिता के माध्यम से लघु फिल्म दिखाकर जंगल और जानवरों को बचाने की महत्वपूर्ण जानकारी पन्ना टाइगर रिजर्व द्वारा दी गई।

पन्ना टाइगर रिजर्व की सफलता पर आधारित लघु फिल्म बच्चों ने देखी जिससे विस्तार से पन्ना टाइगर रिजर्व में कान्हा अभ्यारण्य से बाघ को लाकर दोबारा बाघों की संख्या बढ़ाने में तत्कालीन पन्ना टाइगर रिजर्व का अमला तथा क्षेत्र संचालक आर. श्रीनिवास मूर्ति की कड़ी मेहनत को प्रदर्शित किया गया। उपस्थित बच्चों ने क्विज प्रतियोगिता में जंगल तथा जानवरों के बारे में पूछे गये सवालों के जवाब देकर ईनाम प्राप्त किया इस अवसर पर पन्ना टाइगर रिजर्व क्षेत्र संचालक रवि कांत मिश्रा ने बताया कि अगर हमें हमारा जंगल सुरक्षित रखना है, तो बच्चों को जागरुक करना होगा ताकि आने वाले समय में जंगलों को बचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकें, इसी बात को ध्यान मे रखकर बच्चों को प्रतियोगिता के माध्यम से जंगल और जानवरों को बचाने और सहेजने संबंधी जानकारी दी जा रही है।

"International Tiger Day" Celebration

"International Tiger Day" celebrated every year on 29th July to spread awareness of one of the most charismatic animal "Tigers". It is a day to talk about conflicts, Protections and conservation of the majestic animal and whole Wildlife.

Every year in the occasion of International Tiger day, Madhya Pradesh tiger Foundation society celebrated with Organizing various Programs and campaigns which includes vivid activities pertaining to Tiger and its Conservation.

In this Year,Our Focus was to aware people about the importance of Tiger conservation in ecological balance through Wall Painting Competitions. The program was organized in areas of several districts in Madhya Pradesh which act as a corridors between national parks and tiger reserves where tiger movements have been recorded and people are less aware of tigers presence. The districts were Chhindwara, Betul, Panna ,Satna, Raisen and Sehore.

The Competition was successfully organized and response of people was overwhelming. Around 1300 people were participated from various districts. Winners of the competition were awarded with Prizes and certificates on the occasion of "Independence day".

MP tiger foundation society is committed to work continuously for the cause of wildlife conservation.

Shahbaz Ahmad PCCF Wildlife meeting with Participants and staff.

अनुसंधान विस्तार वृत्तों की रोपणियों में नवाचार

क) वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन

अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त की रोपणीयों में वर्मीकम्पोस्ट खाद का उत्पादन एवं प्रयोग किया जा रहा है। जैविक खाद केचुंए की मदद से तैयार किया जाता है। केचुए अपनी प्रवृत्ति के अनुसार गोबर एवं कचरे के मिश्रण को उपजाऊ जैविक खाद में परिवर्तित कर देते हैं। बड़े स्तर पर केंचुआ खाद का उत्पादन एवं केंचुआ खाद की गुणवत्ता को और अधिक सुदृढ़ एवं कम समय में बनाने हेतु विभिन्न बैक्टीरिया एवं कवक का उपयोग प्रारम्भ किया गया है।

ख) वर्मीकम्पोस्ट तैयार करने की विधि

सभी अनुसंधान वृत्तों में एक बड़े स्तर पर वर्मी कम्पोस्ट निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया गया है। इस कार्य हेतु वर्मी कम्पोस्ट पिट का निर्माण भी किया जा रहा है साथ ही गोबर, खरपतवार की अलग-अलग मात्रा एवं विभिन्न वानस्पतिक पदार्थो का उपयोग कर खाद की गुणवत्ता का परीक्षण कराया जा रहा है। 3×1×0.60 मीटर आकार के सीमेंट पिट से निर्मित संरचना में वर्मीकम्पोस्ट तैयार किया जाता है। सामान्यत: गोबर खाद के घोल को कचरे में मिश्रित कर कुछ समय के लिये विघटित होने के लिए छोड़ दिया जाता है एवं इस मिश्रण का उपयोग केंचुआ खाद बनाने में किया जाता है। इसमें पानी से सींचकर नमी बनाये रखते हैं। सड़े हुए गोबर एवं विघटित खरपतवार का 50-50 के अनुपात में मिश्रण को पिट में भरा जाता है और इसमें कुंचुए छोड़ दिये जाते हैं। इस विधि में एक पिट में लगभग 3 किलो केंचुए की मात्रा पर्याप्त होती है। लगभग 40-50 दिन पश्चात् ये केंचुए मिश्रण को उपयोगी खाद में बदल देते हैं। तत्पश्चात उपरोक्त मिश्रण को छानकर उपयोग हेतु बोरियों में भर लिया जाता है, तथा केचुओं को सावधानीपूर्वक अलग कर अगली बार उपयोग हेतु सुरक्षित कर लिया जाता है।

ग) बॉयो फर्टिलाईजर/जैविक खाद/ जैविक कीटनाशक का प्रयोग

पौधों में विभिन्न बीमारियाँ मुख्यत: फंगस एवं बैक्टीरिया द्वारा होती है। वर्तमान में किये जा रहे अनुसंधान कार्य में ट्रायकोडर्मा फंगस एवं बैक्टीरिया कंर्सोशियम का कल्चर तैयार कर वर्मीकम्पोस्ट में मिलाकर खाद के रूप में उपयोग किया जा रहा है। अच्छी गुणवत्ता के पौधे तैयार करने के उद्देश्य से समस्त रोपणियों में Microbes के साथ जीवामृत, नीलाथोथा, हिंगोट जड़ का रस, पंचपर्णी काढ़ा तथा वर्मीवॉश तैयार कर पौधों पर इनका प्रयोग किया जा रहा है। साथ ही विस्तार गतिविधियों/कार्यशाला के समय उपस्थित कृषकों को इसकी जानकारी भी दी जा रही है।

रासायनिक खाद से जैविक खाद की ओर

जैव उर्वरक के अन्तर्गत करोड़ों सूक्ष्म जीव होते हैं जो मृदा में पोषक तत्वों की उपलब्धता को बढ़ाकर उसके उर्वरा शक्ति में वृद्धि करते हैं। प्रकृति में अनेक प्रकार के जीवाणु, कवक एवं नील हरित शैवाल पाये जाते हैं जो या तो स्वयं या कुछ जीवों के साथ मिलकर वायुमंडलीय नाइट्रोजन का यौगिकीकरण करते हैं। इसी प्रकार प्रकृति में अनेक कवक और जीवाणु पाये जाते हैं जो मृदा में उपस्थित स्फुर, जस्ता आदि को पौधों को उपलब्ध कराने में मदद करते हैं। कुछ कवक कार्बनिक पदार्थों को तेजी से विघटित करते हैं जिसके फलस्वरूप मृदा को पोषक तत्व प्राप्त होते हैं।

जैव उर्वरक से लाभ

- कृत्रिम रासायनिक खादों का 25 से 30 प्रतिशत तक उपयोग कम कर सकते हैं।
- पौधों/फसलों की वृद्धि में सहायक हैं।
- मिट्टी की क्रियाशीलता एवं उत्पादकता को बढ़ाता है।

जैव उर्वरक के प्रकार

1) नाइट्रोजन जैव उर्वरक : ये वे जैव उर्वरक होते हैं जो मृदा में नाइट्रोजन की मात्रा को बढ़ाती है। कई ऐसे जीवाणु हैं जो वायुमण्डलीय नाइट्रोजन का स्थिरिकरण करते हैं। एजेटोबैक्टर, क्लास्ट्रिडियम, बेजरिकिया, रोडोस्पाइरिलम एवं एजोस्पाइरूलम नाइट्रोजन स्थिरिकरण करने वाले कुछ महत्वपूर्ण जीवाणु वायुमण्डलीय नाइट्रोजन को मृदा में मुक्त अवस्था में स्थिरिकरण करते हैं।

2) फॉस्फेटिक जैव उर्वरक : ये वे जैव उर्वरक हैं जो मृदा में बंधे स्फुर को घुलनशील बनाकर पौधों को उपलब्ध कराती हैं। स्फुर को घुलनशील बनाने वाली कुछ जीवाणु जैसे: स्यूडोमोनास, बैसिलस आदि की प्रजाति के हैं जिनका उपयोग तरल जैविक खाद बनाने में किया जाता है।

3) सेल्यूलोटिक जैव उर्वरक : सेल्यूलोटिक जैव उर्वरक वे जैव उर्वरक हैं जो जैविक पदार्थों का तेजी से विघटन करके मिट्टी में पोषक तत्वों को मुक्त कराती है। एजोस्परजिलस, ट्राइकोडर्मा, पेनिसिलियम आदि कवक इस प्रकार के जैविक खाद के प्रमुख उदाहरण है।

09

जैव उर्वरक मुख्यत : दो प्रकार से तैयार किया जाता है :

1. वाहक आधारित जैव उर्वरक: इस विधि में लिग्नाइट पाउडर या कम्पोस्ट खाद उपयोग में लाया जाता है। इसमें जीवाणु छः माह तक जीवित रहते हैं। वाहक आधारित जैव उर्वरक बनाने में समय एवं लागत अधिक लगती है।

2. तरल जैव उर्वरक: तरल जैव उर्वरक को एडिटिव के रूप में उपयोग किया जाता है, जिसकी वजह से जीवाणु की प्रति इकाई संख्या में वृद्धि के साथ उनके जीवनकाल में वृद्धि भी हो जाती है।

एजेटोबैक्टर

एजेटोबैक्टर जीवाणु पौधों के जड़ क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से रहकर वायुमण्डलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर पौधों को उपलब्ध कराता है। साथ ही साथ वृद्धि नियामक पदार्थो का संश्लेषण करके बीज अंकुरण एवं पौधों की वृद्धि को बढ़ाता है। असरकारक जीवाणुओं को जड़ क्षेत्र से पृथक कर संवर्द्धन कर पदार्थ या तरल माध्यम में मिलाकर एजेटोबैक्टर जैव उर्वरक तैंयार किया जाता है। इसका प्रयोग सभी प्रकार की जौ, धान, गेहूँ, ज्वार, तिलहन, कपास, सब्जी, बागवानी व वानिकी पौधों में किया जाता है। जिससे नाइट्रोजनधारी रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग में 10-15 किग्रा./हेक्टेयर तक की बचत की जा सकती है।

एजोस्पाइरिलम

इसके जीवाणु जड़ों में गांठें नहीं बनाते, किन्तु जड़ों पर मण्डल बनाकर रहते हैं और पौधों को वायुमण्डलीय नाइट्रोजन प्रदान करते हैं। इनके उपयोग से बागवानी व वानिकी पौधों, घास तथा चारे वाली फसलों में नाइट्रोजन की बचत होती है।

फॉस्फेट घोलक सूक्ष्म जीवाणु (पी.एस.बी.)

फॉस्फेट घोलक सूक्ष्म जीवाणु मृदा में मौजूद अघुलनशील फॉस्फोरस तथा अकार्बनिक फॉस्फेट को घोलने वाले जैविक अम्लों जैसे फॉरमिक, एसिटिक, लैक्टिक, यूमेरिक, सक्सीनिक अम्लों का स्त्रवण कर इनको घुलनशील बनाता है। इसके परिणामस्वरूप कैल्शियम, एल्यूमिनियम और आयरन के साथ जुड़े हुए अघुलनशील फॉसफेट का विलय होता है और पौधों के लिए फॉस्फोरस की उपलब्ध्ता बढ़ाता है। जिसका सभी प्रकार की फसलों में प्रयोग कर 20-25 प्रतिशत तक फॉस्फोरसधारी उर्वरकों की बचत की जा सकती है। पी.एस.बी. बैक्टीरिया खनिजीकरण प्रक्रिया द्वारा भी पौधों के मृत जैविक अवशेषों से फॉसफेट को निर्मुक्त करते हैं।

मुख्य लाभः फॉस्फोरस जैव-विविधता बढ़ाता है और इसके द्वारा -

- कोशिका विभाजन, कोशिका के विकास और डी.एन.ए. के बनने में मदद करता है।
- जड़ के विकास में विशेष योगदान
- फूलों के विकास और फल/दाने बनने की गति को बढ़ाता है फसल के पकने में तेजी लाता है।

ट्राइकोडर्मा

ट्राइकोडर्मा फफूंद, शत्रु फफूंद को माइसिलिया से लपेटकर उनसे भोजन प्राप्त करता है और शत्रु कवक के जाल को नष्ट/मृत कर देता है। इसके साथ ही यह जहरीले तत्व का उत्सर्जन करता है जो बीज के चारों तरफ एक आवरण बनाकर शत्रु फफूंद से बीज की रक्षा करता रहता है। यह बहुत तीव्रता से अपना कवक जाल फैलाकर शत्रु फफूंद को पौधे के पास आने नहीं देता और एक सुरक्षा क्षेत्र उत्पन्न करता है जो बहुत लम्बे समय तक रोगों से रक्षा करता है। ट्राइकोडर्मा से अंगमारी, तना सड़न, उकठा आदि का सफल प्रबंधन किया जाता है। ट्राइकोडर्मा फफूंद का प्रयोग सभी सब्जियों, फलों मसालों गन्ना कपास तथा बागवानी व वानिकी पौधों में किया जाता है। इससे 10 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित किया जाता है।

माइकोराइजा

माइकोराइजा एक कवक है जो पौधों की जड़तंत्र में कॉलोनियां बनाता है और सहजीवी सहचर्य को विकसित करता है। यह तंतुओं का एक जाल तंत्र बनाती है जो पौधों की जड़ों के साथ जुड़ जाता है और मिट्टी से पोषक तत्वों विशेषकर स्फुर एवं पानी को खींचता है। माइकोराइजा द्विवर्षीय एवं बहुवर्षीय फसलों, सब्जियों एवं फल वृक्षों में अधिक लाभकारी एवं प्रभावी देखा गया है। सूखा तथा अन्य तनाव उत्पन्न करने वाले कारकों के प्रति सहनशीलता बढ़ाता है, फल और फूल बनने का संवर्धन करता है और भू-क्षरण को रोकता है।

- **फलों में :** अंगूर, अनार, नींबूवर्गीय, आम, पपीता आदि।
- **नकदी फसलें :** कपास, गन्ना, तम्बाकू, फूल, गुलाब, गेंदा, गुलदाउदी, रजनीगंधा आदि।
- **कृषि वानिकी/फल वृक्ष :** सभी फल वृक्ष/कृषि वानिकी (जड़ी बूटी, वार्षिकी और बारहमासी झाड़ियाँ ईंधन) के लिए पौधे, लकड़ी, चारा, फल, मसाले, फूल नट बीज आदि के लिए।

जीवामृत

वर्तमान में अनुसंधान विस्तार की रोपणियों में जीवामृत का उपयोग का प्रारम्भ किया गया है। जीवामृत सूक्ष्म जीवों का महासागर है जो एक पौधावर्धक के रूप में कार्य करता है। जीवामृत पूर्णत: जैविक है एवं प्राकृतिक पौधा वर्धक औषधि है जिसके काफी अच्छे परिणाम अनुसंधान विस्तार की रोपणियों में देखे जा रहे हैं। 200 लीटर जीवामृत बनाने के लिए लगभग 10 कि.ग्रा. ताजा गोबर, 5–10 लिटर गोमूत्र, 1–2 कि.ग्रा. गुड़, 1–2 कि.ग्रा. दलहन आटा, एक मुट्ठी जीवाणुयक्त मिट्टी (100 ग्राम) और लगभग 180 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। प्राप्त मिश्रण को सुबह–शाम लकड़ी या अन्य वस्तु से घड़ी की सुई की दिशा में घुमाया जाता है। 48 घंटे के बाद मिश्रण को छानकर प्राप्त द्रव को उपयोग किया जाता है और ध्यान रख जाता है कि प्राप्त द्रव 7 दिवस के अन्दर इस्तेमाल हो जाए। सामान्यत: 200 लीटर जीवामृत में 2000 लीटर पानी मिलाकर उपयोग किया जाना उपयुक्त होता है।

1 एकड़ भूमि में 200 लीटर जीवामृन पानी के साथ टपक विधि से या धीमे–धीमे बहा दिया जाता है। पहला छिड़काव बुआई के 1 माह बाद 1 एकड़ में 10 लीटर पानी, 5 लीटर जीवामृत मिलाकर किया जाता है। दूसरा छिड़काव इसका छिड़काव 21 दिन बाद 1 एकड़ भूमि में 150 लीटर पानी में 10 लीटर जीवामृत मिलाकर किया जाता है। तीसरा एवं चौथा छिड़काव 21–21 दिन बाद 200 लीटर पानी में 20 लीटर जीवामृत मिलाकार किया जाता है। आखिरी छिड़काव Milking Stage में प्रति एकड़ में 200 लीटर पानी में 5–10 लीटर खट्टी छांछ (मट्ठा) मिलाकर किया जाता है।

सावधानियाँ

- जैव उर्वरक हमेशा विश्वसनीय स्रोत से खरीदें।
- यदि जैव उर्वरक वाहक आधारित है तो ध्यान दें कि वाहक चूर्ण पूरी तरह से सूखा न हो।
- जैव उर्वरक हमेशा फसल विशिष्ट पर ही प्रयोग करें।
- जैव उर्वरक लेते/प्रयोग करते समय पैकेट पर अंकित निर्माण एवं अंतिम तिथि ध्यानपूर्वक देखें।
- जैव उर्वरक को सूर्य की रोशनी, ऊष्मा व अन्य कृषि रसायनों से हमेशा दूर रखें।
- जैव उर्वरक का भंडारण ठंडे स्थान पर करें।

भविष्य की रणनीति

- उपचारित पौध को जितना जल्दी संभव हो रोपाई कर दें, उसे अगले दिन के लिए न रखें।
- माइक्रोब्स का बड़े स्तर पर उपयोग।
- नीम खली तेल का उपयोग
- पारम्परिक जैविक खाद जीवामृत आदि का उत्पादन एवं उपयोग
- जैविक खाद के उपयोग पर प्रशिक्षण

वन्य प्राणी शाखा की गतिविधियां

मानव एवं वन्य प्राणी द्वन्द्व – सीधी में जंगली हाथियों का बचाव

सीधी जिले के छत्तीसगढ़ राज्य से लगी सीमा क्षेत्र में जंगली हाथियों की गतिविधियां वर्ष 2002 से ही देखी जा रही हैं। जंगली हाथियों द्वारा यह क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य के गुरू घासीदास राष्ट्रीय उद्यान के वन क्षेत्र एवं मध्यप्रदेश के संजय टाइगर रिजर्व के बीच आवागमन के रास्ते के रूप में उपयोग किया जाता था। वर्ष 2002 से 2007, 2009, 2013, 2015 उसके बाद 2017 में 2 बार संजय टाइगर रिजर्व के मोहन परिक्षेत्र में जंगली हाथियों ने संक्षिप्त समय हेतु प्रवास किया था। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि सीधी के क्षेत्रीय वनमंडल के क्षेत्र में बिजली के तारों के संपर्क में आने से वर्ष 2015 में 2 नर हाथियों की मृत्यु हो गयी थी।

वर्ष 2018 में 5 जंगली हाथियों का झुण्ड संजय टाइगर रिजर्व में दिनांक 4 अगस्त 2018 को पूर्व वर्षों में उपयोग में लाये जा रहे रास्ते से एक अलग रास्ते से मवई नदी को पार करते हुए छत्तीसगढ़ राज्य की ओर से पोंडी परिक्षेत्र के कुन्डोर गांव के समीपस्थ क्षेत्रों में प्रवेश कर गया। हाथियों के झुण्ड ने अपने रास्ते से गुजरने के दौरान खेतों एवं घरों को अत्यधिक नुकसान पहुंचाया। इससे जन आक्रोश बढ़ गया और ग्रामीणों द्वारा परिक्षेत्र कार्यालय का घेराव किया गया। इसके अतिरिक्त ग्रामीणों द्वारा वन कर्मियों से मारपीट एवं चक्काजाम आदि भी किया गया। वन विभाग द्वारा हाथियों के मानव बस्तियों/ग्रामों में प्रवेश को रोकने के लिये विभिन्न प्रयास जैसे तेज आवाज करना, पटाखे फोड़ना, हांके लगाना आदि किये एवं उन्हें वापस छत्तीसगढ़ की ओर लौटाने के प्रयास किये। किन्तु वन विभाग का यह प्रयास सफल नहीं हो सका और हाथी सघन ग्रामीण क्षेत्र में प्रवेश कर गये। ऐसे क्षेत्र में भीड़ को नियंत्रित करना बहुत कठिन हो गया था। जंगली हाथियों का दल अपना रास्ता बदल कर 3 सितम्बर 2018 को शहडोल जिले की बनास नदी को पार किया फिर प्रात: 4:00 बजे को रात्रि में ही शहडोल जिले के सथनी गांव में प्रवेश कर गया और लोगों की निजी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने लगा। इसमें 2 लोग घायल हो गये एवं एक व्यक्ति की मृत्यु हुई।

हाथियों द्वारा किये जा रहे नुकसान की गंभीर स्थिति एवं जनसामान्य के साथ हाथियों की सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए मुख्य वन्यप्राणी अभिरक्षक को एक पत्र लिखकर हाथियों को रेस्क्यू करने हेतु औपचारिक अनुमति प्राप्त की गयी। समस्या से निपटने हेतु क्षेत्र संचालक बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व एवं क्षेत्र संचालक संजय टाइगर रिजर्व के द्वारा संयुक्त रूप से एक टीम गठित कर 6 सितंबर से

हाथियों के रेस्क्यू के प्रयास प्रारंभ किये गये। टीम में 3 वन्यप्राणी चिकित्सक, दोनों टाइगर रिजर्व का स्थानीय अमला, सीधी सामान्य वनमंडल का अमला एवं टाइगर रिजर्व्स में कार्यरत 10 हाथी एवं उनके महावत भी शामिल थे। प्रतिकूल मौसम, दुर्गम इलाके में ग्रामीणों द्वारा हाथियों को मारने पर उतारू भीड़ के गुस्से को देखते हुए दल ने सर्वप्रथम भीड़ को नियंत्रित करते हुए जंगली हाथियों के झुंड को ग्रामीण इलाके से जंगली इलाके में प्रवेश कराने के प्रयास किये गये। लेकिन इसी दिनांक को हाथियों द्वारा आसपास के गांवों पर पुन: प्रवेश करते हुए ग्रामीणों की फसल एवं घरों, संपत्ति को नुकसान पहुंचाया। इस दौरान 7 सितंबर 2018 को सीधी जिले के देव्रच गांव में हाथियों द्वारा पुन: एक व्यक्ति को मार डाला गया।

रेस्क्यू दल ने जनाक्रोश को नियंत्रित करते हुए अपने प्रयास जारी रखे एवं 3 दिनों की निरंतर कड़ी मेहनत के बाद दिनांक 9 सितंबर 2018 को रेस्क्यू टीम द्वारा एक जंगली नर हाथी पकड़ लिया गया। दल ने अपने प्रयास जारी रखे और दिनांक 12 सितंबर 2018 को एक नर हाथी, दिनांक 15 सितंबर 2018 को 2 मादा हाथी एवं दिनांक 16 सितंबर 2018 को एक नर हाथी को पकड़ने में सफलता मिली। प्रदेश के रेस्क्यू दलों द्वारा बिना किसी

बाहरी विशेषज्ञ सहयोग के स्थानीय संसाधनों एवं विशेषज्ञता के साथ जंगली हाथियों के दल को रेस्क्यू करने का प्रथम बड़ा प्रयास था जो सफल रहा। इस कार्य में लगभग 140 वन कर्मचारियों/अधिकारियों का प्रत्यक्ष योगदान था। रेस्क्यू किये गये हाथियों का रेस्क्यू टीम के प्रशिक्षित वन्यप्राणी चिकित्सकों द्वारा स्वास्थ्य परीक्षण किया। इन जंगली हाथियों को विगत दिवसों में मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्य के कई ग्रामों में गुस्साई भीड़ का सामना करना पड़ा था और उन्हें रोकने के लिये आक्रोषित भीड़ द्वारा हाथियों पर अजमाये गये विभिन्न प्रकार के हथियारों, पत्थरों आदि के चिन्ह हाथियों के पूरे शरीर पर दिख रहे थे। उन्हें पूरे शरीर में कई जगह फोड़े हो गये थे और जिनमें कीड़े भी पड़ गये थे। एक हाथी को स्थानीय बंदूक द्वारा मारा गया था उसके नाखून में मवाद भरा था। 23 सितंबर की प्रात: एक नर हाथी की अचानक मृत्यु हो गयी। संभवत: हाथियों के प्रति आक्रोशित किसी व्यक्ति द्वारा उसे जहर दे दिया गया। इस दुर्घटना का वनमण्डल सीधी द्वारा वन अपराध पंजीबद्ध कर घटना की वास्तविक कारणों की जांच की जा रही है। शेष सभी हाथियों को सुरक्षित तरीके से बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में ले जाकर रखा गया है।

वन विहार की गतिविधियाँ

वयोवृद्ध मादा सिंह जमुना ने औसत उम्र से अधिक समय वन विहार में बिताया

मादा सिंह जमुना को लगभग 17 वर्ष की उम्र में बिलासपुर छत्तीसगढ से दिनांक 1 जुलाई 2010 को वन विहार लाया गया था। उसे राजमहल सर्कस भिलाई से मुक्त कराया गया था। उक्त मादा सिंह 25 वर्ष पूर्ण कर 26वें वर्ष में चल रही थी। यह मादा सिंह देश की सबसे वयोवृद्ध मादा सिंहों में शुमार थी।

वन विहार प्रबंधन की विशेष देखभाल के कारण मादा सिंह जमुना ने अपनी औसत उम्र से बहुत अधिक जीवन वन विहार में बिताया। वन्यप्राणी चिकित्सक द्वारा जमुना के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखा जा रहा था। जमुना को किसी भी प्रकार की कोई बीमारी नहीं थी। वृद्ध होने के कारण शरीर में कमजोरी हो गई थी। वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल के रेस्क्यू सेंटर में रह रही वयोवृद्ध मादा सिंह जमुना की छब्बीसवें साल में दिनांक 9 सितम्बर 2018 को प्रात: मृत्यु हो गई।

शोकाकुल माहौल में जमुना को पूर्ण सम्मान के साथ संचालक, सहायक संचालक एवं वन विहार के स्टाफ की उपस्थिति में अग्नि को समर्पित किया गया।

पहली बार वन विहार में दो चौसिंगा का जन्म

वन विहार नेशनल पार्क में पहली बार दो चौसिंगा का जन्म हुआ है। जन्म लेने वाले शावकों में एक मादा है। पार्क डायरेक्टर श्रीमती समीता राजौरा के अनुसार वन विहार में दो नर और एक मादा चौसिंगा रेस्क्यू कर लाये गये हैं। बाड़े में ब्रिडिंग के लिए एक जोड़े चौसिंगा को रखा गया था। चौसिंगा को वन्यप्राणी संरक्षण अधिनियम के तहत इस हिरन प्रजाति को शेड्यूल 1 में रखा गया है।

वन विहार की वयोवृद्ध खुशमिजाज मादा सिंह शिवानी

वयोवृद्ध मादा सिंह शिवानी को लगभग सात वर्ष की उम्र में जयपुर जू से दिनांक 18 मई 2006 को वन विहार लाया गया था। इस मादा सिंह को जंबो सर्कस से मुक्त कराया गया था। मादा सिंह शिवानी सीधी वन्यप्राणी थी इसकी देखभाल करने वाले जू कीपर श्री अवनीश त्रिपाठी को इससे बहुत लगाव था, वो जब भी इसको आवाज देते थे तो वह हाउसिंग में खिड़की के पास आ जाती थी। शिवानी के नखरों से वन विहार प्रबंधन भलीभांति परिचित था। इसको चिकन खाना बहुत प्रिय था। खाने के मामले में यह रूचिकर भोजन ही करती थी। जब इसका मन चिकन खाने का होता तो यह भैंसा मांस खाना बंद कर देती थी। तब जू कीपर श्री त्रिपाठी समझ जाते थे कि इसका मन चिकन खाने का है इसे भैंसा मांस के स्थान पर जब चिकन दिया जाता तो उसे बड़े चाव से खाती थी। दो तीन दिन चिकन खाने के बाद भैंसा मीट खाने लगती थी। इसकी इस आदत से वन विहार प्रबंधन काफी प्रभावित था। अपने कीपर की बात भी यह पूरी तरह से समझती थी। शिवानी एक अत्यंत खुश मिजाज शेरनी थी। श्रृद्धांजलि स्वरूप वन विहार की एक हाउसिंग का नाम शिवानी के नाम पर रखा गया है। वन विहार प्रबंधन की विशेष देखभाल के कारण मादा सिंह शिवानी ने अपनी औसत उम्र से अधिक जीवन वन विहार में बिताया है। वृद्धावस्था के कारण इसका शरीर कमजोर हो गया था। वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल के रेस्क्यू सेंटर में रखी गई वयोवृद्ध मादा सिंह शिवानी की दिनांक 13 जुलाई 2018 को प्रातःकाल मृत्यु हो गई थी।

वन विहार में लाया गया एल्बिनो कोबरा सांप

दिनांक 2 अगस्त 2018 को वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल में बैतूल से एक एल्बिनो (सफेद) कोबरा सांप लाया गया। इस सांप को बैतूल जिले के सारणी परिक्षेत्र से दिनांक 31 जुलाई 20 18 को रेस्क्यू किया गया था। यह साँप बहुत आकर्षक एवं सुंदर दिखता है। प्रकृति ने कोबरा सांप को काला रंग दिया है परन्तु जेनेटिक मॉडीफिकेशन के कारण कभी–कभी एल्बिनो प्राणी जन्म लेते हैं। यह प्राणी प्रकृति ज्यादा समय तक जीवित नहीं रह पाते हैं क्योंकि प्रकृति ने सभी प्राणियों को प्राकृतिक वातावरण में रहने हेतु प्रकृति के हिसाब से रंग दिये गये हैं। विपरीत रंग होने के कारण ये शिकारी की नजर से नहीं बच पाते हैं। वन विहार में वन्यप्राणी चिकित्सक द्वारा स्वास्थ्य परीक्षण किया जाकर इसको वन विहार में सांपों के लिये बनाये गये ट्रांजिट सेंटर में निगरानी में रखा गया है।

तेंदुआ रेस्क्यू कार्यवाही विवरण

दिनांक 15.07.18 को वन विभाग ब्यावरा को दोपहर 11.30 बजे सूचना मिली कि ब्यावरा जिला राजगढ मध्यप्रदेश में शहर के मध्य प्रोगेसिव स्कूल के गार्डन के पीछे श्री चंदप्रकाश गुप्ता के बाड़ें में एक तेंदुआ देखा गया है, जिसने एक व्यक्ति को घायल कर दिया है। सूचना के पश्चात् वन विभाग ब्यावरा का अमला तुरंत घटना स्थल पर पहुंचा एवं मुआयना किया। मुआयने के दौरान वन विभाग का एक कर्मचारी एक झाड़ी के पास से गुजर रहा था तो वहाँ से अचानक झाड़ी से तेंदुआ निकला और उस कर्मचारी पर हमला किया। हमले के बाद तेंदुआ बाड़े की बाउंड्रीवाल से कूदकर मंथन स्कूल की दीवार के पास से होकर श्री गणेशराम के बगीचे की झाड़ियों में चला गया। उस बगीचे को वन विभाग ब्यावरा के अमले एवं पुलिस द्वारा घेर लिया गया। तत्पश्चात् रीजनल रेस्क्यू स्क्वाड वन विहार राष्ट्रीय उद्यान को दोपहर लगभग 1.30 बजे सूचना प्राप्त हुई। सूचना प्राप्त होते ही वन विहार रेस्क्यू स्क्वाड के सभी सदस्य सायंकाल 5.10 बजे घटना स्थल पर पहुंच गई।

घटना स्थल पर पहुंचने के तुरंत बाद वन्यप्राणी चिकित्सक ने स्थानीय एस.डी.एम. एवं रेंज ऑफीसर से तेंदुए की उपस्थिति एवं घटना स्थल की जानकारी ली तथा घटना स्थल का मुआयना किया। रेंज ऑफीसर ब्यावरा ने तेंदुए की संभावित लोकेशन्स की जानकारी दी। उक्त तेंदुआ शहर के मध्य एक स्कूल के पीछे गार्डन/खेत में था। इस खेत के चारों ओर रहवासी क्षेत्रा था। करीब 100 मीटर दूर ही ब्यावरा शहर का मुख्य बाजार भी था। साथ ही साथ इस क्षेत्रा में करीब पांच प्रतिष्ठित स्कूल एवं कोचिंग सेंटर थे। इस कारण वहाँ काफी अनियंत्रित भीड़ भी थी।

तत्पश्चात घटना स्थल से एस.डी.एम. एवं स्थानीय टी. आई. से चर्चा कर भीड़ को हटाया गया।

रेस्क्यू की कार्यवाही : रेंज आफीसर ने बताया कि दोपहर 12.30 बजे से तेंदुआ नहीं दिखा है, परन्तु संभावित स्थान को रेस्क्यू टीम एवं स्थानीय वन विभाग के अमले द्वारा घेर लिया गया एवं तेंदुए की खोज शुरू की। जिसमें ड्रॉन कैमरे की भी मदद ली गई। सायंकाल लगभग 7.15 बजे तक सर्चिंग करने के बाद भी तेंदुए की लोकेशन का पता नहीं चल सका। अचानक अनियंत्रित भीड़ के शोरगुल करने से तेंदुआ एक झाड़ी में से निकलकर बगीचे के दूसरी ओर भागा और कोने में झाड़ी और पेड़ के नीचे बैठ गया। अंधेरा होने के कारण टार्च से रोशनी डाली गई, उसमें तेंदुआ बैठा दिखाई दिया। इस स्थल के दोनों तरफ ऊंची इमारतों की दीवारें थीं। वन्यप्राणी चिकित्सक के निर्देशन में सामने की तरफ से रेस्क्यू टीम एवं स्थानीय वन विभाग के अमले द्वारा जाल लगाकर अवरोध बनाया गया जिससे तेंदुआ निकल न पावे। तत्पश्चात वन्यप्राणी चिकित्सक ने जहाँ पर तेंदुआ बैठा हुआ था उसके पास वाले भवन की छत पर जाकर उसको बेहोश करने की संभावनाओं को तलाशा। वन्यप्राणी चिकित्सक द्वारा सभी संभावनाओं को

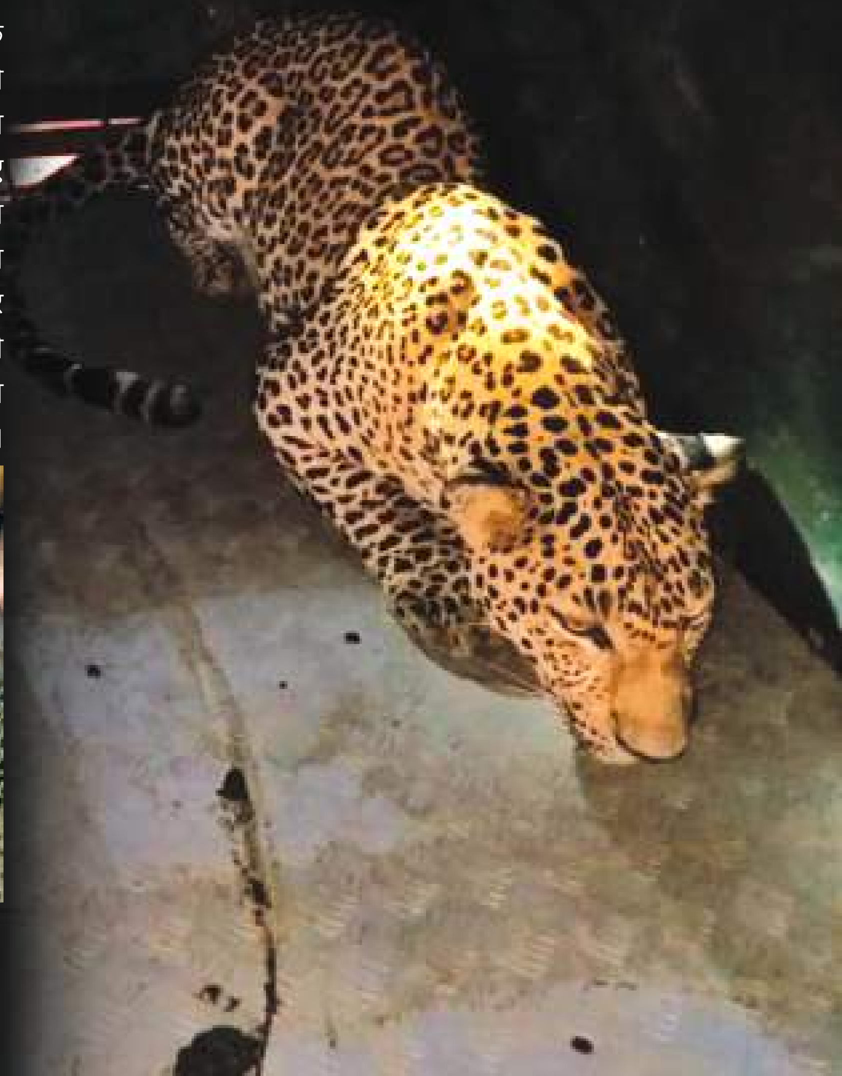

तलाशने के बाद तथा यदि तेंदुआ भागता भी है तो किसी भी प्रकार की जनहानि न हो इस बाबत सभी इंतजामों को पुख्ता करने के बाद वन्यप्राणी चिकित्सक ने उसको अंधेरे में ही बेहोश करने का फैसला लिया। रात्रि लगभग 8.30 बजे वन्यप्राणी चिकित्सक द्वारा ट्रेंक्यूलाईज गन से करीब तीस फिट ऊपर से उसे डार्ट किया गया। डार्ट लगने के 15 मिनट बाद बेहोश हो गया। बेहोश होने के पश्चात तुरंत तेंदुए को जाल में लपेटकर बोलेरो वाहन में रखा गया क्यों कि अनियंत्रित भीड़, रहवासी क्षेत्रा एवं बाजार होने के कारण रेस्क्यू वाहन का तेंदुए के पास तक पहुंचना संभव नहीं था। बेहोशी की हालत में अनियंत्रित भीड़े से बचाकर उसको पास के स्कूल में खड़े रेस्क्यू वाहन के पिंजड़े में शिफ्ट किया गया तथा लगभग रात्रि 9.30 तुरंत भोपाल के लिये रवाना हुये। ब्यावरा से रवाना होने के पश्चात भोपाल हाईवे मार्ग पर एकांत में वाहन रोका गया तथा तेंदुए का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। स्वास्थ्य परीक्षण में वह स्वस्थ्य पाया गया। तदोपरांत उसको एंटीडोट दिया गया। एंटीडोट देने के 10 मिनट पश्चात वह पूर्णत: होश में आ गया। तदोपरान्त उसे परिवहन कर रात्रि 1.30 बजे वन विहार लाया गया।

रेस्क्यू किया गया नर तेंदुआ उम्र लगभग 5 से 6 वर्ष, स्वस्थ्य था, इस कारण उसको प्राकृतिक रहवास में छोड़ने का निर्णय लिया गया। प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) म.प्र. के निर्देशानुसार इसे दिनांक 16.7.18 को रातापानी अभ्यारण्य औबेदुल्लागंज के परिक्षेत्र देहलाबाड़ी की बीट नाहरकोला के कक्ष क्रमांक आएफ 556 में छोड़ा गया।

उक्त तेंदुए का रेस्क्यू ऑपरेशन एक उत्कृष्ट उदाहरण है, क्योंकि यह घनी आवादी वाले क्षेत्रा में था जिससे किसी भी प्रकार की भारी मात्रा में जनहानि हो सकती थी। इस रेस्क्यू ऑपरेशन में बिना कोई जनहानि के तथा वन्यप्राणी को बिना किसी प्रकार की चोट पहुंचाये स्वस्थ्य हालत में रेस्क्यू कर उसको उसके प्राकृतिक रहवास में छोड़ने की कार्यवाही की गई। इसमें वन विहार राष्ट्रीय उद्यान के प्रबंधन एवं रेस्क्यू टीम के सदस्यों का उल्लेखनीय योगदान रहा तथा साथ ही साथ वन विभाग ब्यावरा के अधिकारी/कर्मचारियों का भी अच्छा योगदान रहा।

राष्ट्रीय वन शहीद दिवस

शहीद स्व. श्री राम मनोहर वर्मा, वनपाल थे। इन्हें वन विहार में इनके साथी प्यार से रामू बुलाते थे। स्व. श्री रामू को वन्यप्राणियों से बेहद लगाव था एवं वे सभी प्रकार के वन्यप्राणियों की देखरेख करने में दक्ष थे।

दिनांक 07.03.1983 को एक हादसे में श्री रामू को उन्हीं के द्वारा पाले गये एक नर नीलगाय ने हमला कर घायल कर दिया था, जिसकी बजह से उनकी मृत्यु हो गई थी। वन विहार में श्री रामू की समाधि विद्यमान है। स्व. श्री रामू को उनकी समाधि स्थल पर संचालक, सहायक संचालक, वन्यप्राणी चिकित्सक तथा अन्य उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों

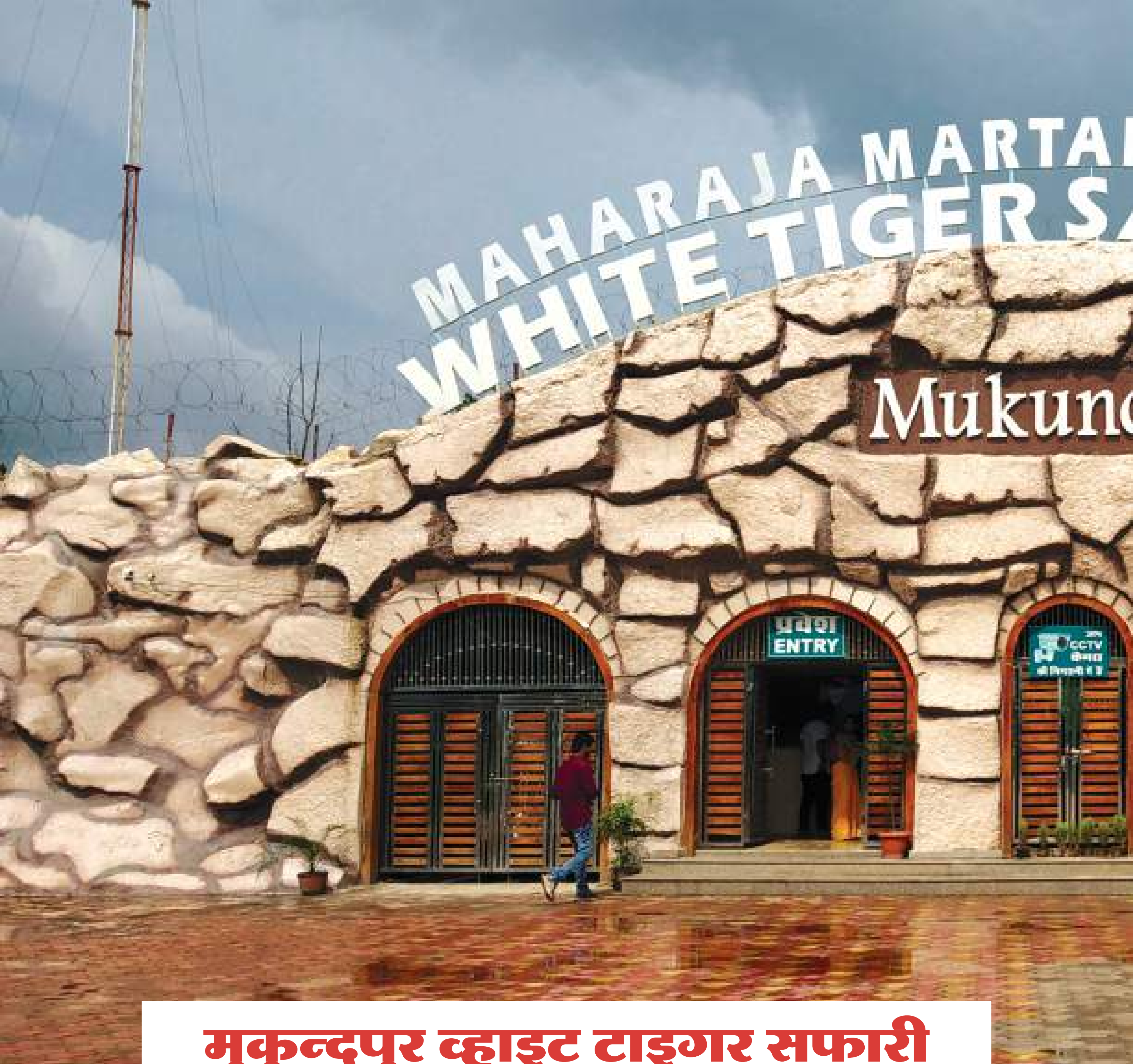

मुकुन्दपुर व्हाइट टाइगर सफारी

मुकुन्दपुर व्हाइट टाइगर सफारी सफेद बाघ के लिए संभवत: दुनिया की प्रथम सफारी है जहां 40 साल बाद सफेद बाघ इतने बड़े क्षेत्र में विचरण करेगा। मुकुन्दपुर जू का पूरा नाम महाराजा मार्तन्ड सिंह जूदेव के नाम पर रखा गया है। इसकी विधिवत उद्घाटन माह अप्रैल 2016 में प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा किया गया।

चिड़ियाघर की स्थापना के उद्देश्य

- पर्यटकों में वन्यप्राणियों के प्रति लगाव एवं संवेदना उत्पन्न करना ताकि, उनमें वन्यप्राणियों के लिए बेहतर सोच उत्पन्न हो।
- लुप्तप्राय ऐसे वन्यप्राणी जो कि विन्ध्य एवं आसपास के भौगोलिक वनक्षेत्र में निवास करते हैं, का संरक्षण एवं प्रजनन के लिए केन्द्र की स्थापना।
- वनक्षेत्रों से भटक कर बाहर आए लुप्तप्राय अनाथ एवं बीमार वन्यप्राणियों को बेहतर आवास एवं चिकित्सा उपलब्ध कराना।

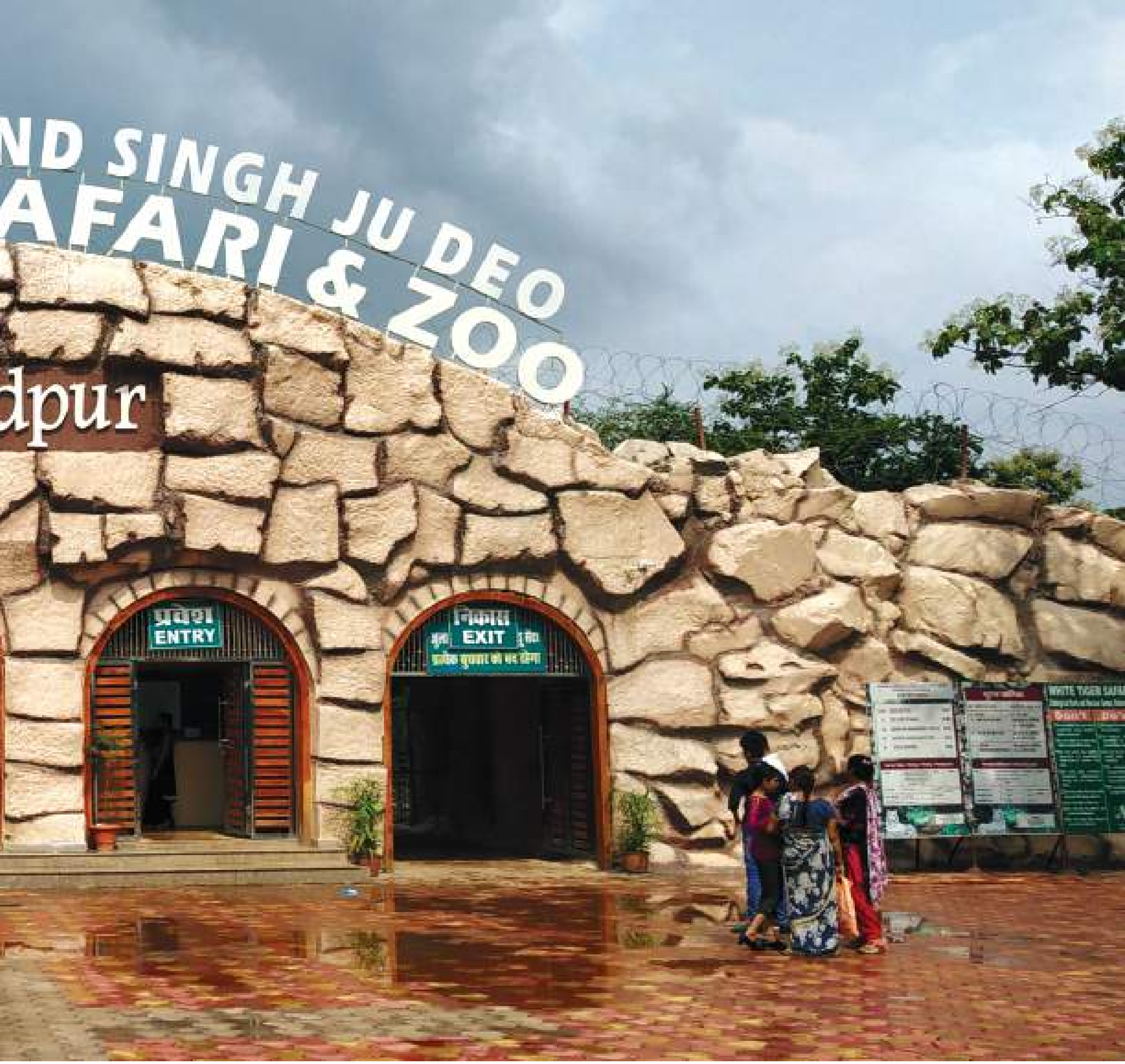

- चिड़ियाघर में निवास कर रहे वन्यप्राणियों के व्यवहार एवं स्वास्थ्य के बारे में आंकड़े एकत्र करना एवं उनका अध्ययन कर भविष्य में वन्यप्राणियों के हित में उपयोग करना।
- वन्यप्राणियों के प्रति जनजागृति उत्पन्न करना, उनके प्रति लगाव व संवेदनशीलता के लिए प्रचार प्रसार कर प्राकृतिक रूप से वनों में रहने वाले वन्यप्राणियों के संरक्षण का प्रयास करना।
- चिड़ियाघर के निकटवर्ती वनक्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले औषधीय पौधों की पहचान कर उनकी वृद्धि के लिए अनुसंधान केन्द्र की स्थापना।
- ऊपर वर्णित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वनों को बिना क्षति पहुंचाये अधिक से अधिक लोगों के लिए बाह्य प्राकृतिक वातावरण तैयार करना, स्वस्थ मनोरंजन एवं शैक्षणिक गतिविधियां संचालित कर वन्यप्राणियों के प्रति जागरुकता लाना।

टाईगर बाड़ा 3000 वर्गमीटर में बनाया गया है।

व्हाइट टाईगर बाड़ा 3400 वर्गमीटर में बनाया गया है।

स्लॉथ बियर बाड़ा 2000 वर्गमीटर में बनाया गया है।

एग्जिविट गैलरी

पेन्थर बाड़ा 1150 वर्गमीटर में बनाया गया है।

लायन बाड़ा 3300 वर्गमीटर में बनाया गया है।

हाथियों का हेल्थ चेकअप, खिलाये गये मीठे पकवान

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के नेशनल पार्क मढ़ई में स्थित खरेर हाथी कैंप में एक वर्ष के विक्रमादित्य हाथी का जन्मदिवस धूमधाम से मनाया गया। यह कार्यक्रम एक सप्ताह तक चलने वाले हाथी पुर्नयावनीकरण का हिस्सा था। इसमें हाथियों को विशेष भोज के अलावा उनका हेल्थ चेकअप किया जाएगा। कैंप में मौजूद सभी हाथियों को स्नान कराकर उनकी सूंढ पर त्रिशूल व ऊँ का चिन्ह बनाया गया। इस अवसर पर वन विभाग के सदस्यों के अलावा फोरेंसिक एंड हेल्थ, जबलपुर के सदस्य मौजूद रहें।

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व में हाथी हेल्थ चेकअप कैम्प

कान्हा टाइगर रिजर्व में हाथी हेल्थ चेकअप कैम्प

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

मध्यप्रदेश के विभिन्न वनक्षेत्रों में कार्बन संचयन पर अध्ययन

संस्थान द्वारा मध्यप्रदेश के विभिन्न वनक्षेत्रों में कार्बन संचयन अध्ययन हेतु परियोजना "Protection, maintenance and successional study in terms of growth, biomass and carbon sequesteration in presentation plots in different forest types of Madhya Pradesh" केम्पा मद के अंतर्गत वन विभाग को प्रस्तुत की गई थी। इसी परियोजना के अंतर्गत मध्यप्रदेश के विभिन्न वनक्षेत्रों में स्थित परिरक्षित भूखण्डों में कार्बन संचयन एवं कार्बन पूल का अध्ययन किया गया।

इस अध्ययन के अंतर्गत मध्यप्रदेश वनों के वृक्षों द्वारा कुल 29.31 टन प्रति हेक्टेयर कार्बन सचयन किया जाता है एवं वन मृदा में (1 मी. गहराई तक) 146.18 टन प्रति हेक्टेयर कार्बन का आकलन किया गया। इसी प्रकार वनों के अन्य घटक जैस स्थापित पुनरूत्पादन में, घास प्रजाति में एवं लिटर में भी कार्बन का आकलन किया गया। मध्यप्रदेश के वनों में कुल कार्बन पूल 178.12 टन प्रति हेक्टेयर पाया गया। मध्यप्रदेश में कुल 23 वन प्रकार पाये जाते हैं। इन प्रकारों में से सदर्न मोईस्ट मिक्स्ड डेसीडुअस फॉरेस्ट में कार्बन पूल सबसे ज्यादा (246.87 टन प्रति हे.) पाया गया जबकि सबसे कम (70.19 टन प्रति हे.) ड्राई पेनिनसुलर साल फॉरेस्ट एवं सबसे कम (3.01 टन प्रति हे.) नार्दन ट्रापिकल रेवाईन थोर्न फॉरेस्ट में पाया गया। कार्बन फ्लक्स अधिकतम (5.85 टन प्रति हे.) एवं न्यूनतम (0.14 टन प्रति हे.) क्रमषः ड्राई बेम्बू ब्रेक एवं ड्राई सवाना फॉरेस्ट में पाया गया।

उपरोक्त अध्ययन की तुलना एफ.एस.आई. 2017 के द्वारा प्रदर्शित आंकड़ों से करने हेतु मृदा कार्बन का आकलन 30 से.मी. गहराई तक किया गया एवं मृदा में कुल कार्बन 43.85 टन प्रति हेक्टेयर पायी गई। मध्यप्रदेश के वनों में कुल कार्बन पूल 30 से.मी. गहराई तक 75.82 टन प्रति हेक्टेयर पाया गया।

लाख कीट प्रजातियों का संरक्षण

लाख कीट के संरक्षण के लिए राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में लाख कीट सहयोगी केन्द्र की स्थापना वर्ष 2014 में की गई थी। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) द्वारा पोषित परियोजना "Network Project on Conservation of Lac Insect Genetic Resources" के अंतर्गत मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गोवा, दमन एवं दीव में लाख संरक्षण कार्य हेतु इस केन्द्र द्वारा प्रयास किये जा रहे हैं। परियोजना के अंतर्गत इन सभी राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों के जिलों में लाख कीट सर्वेक्षण किया गया। जिसमें मध्यप्रदेश के 35 जिलों के 98 विकासखंड एवं महाराष्ट्र के 26 जिलों के 63 विकासखण्डों में लाख की उपस्थिति पाई गई।

संस्थान में लाख कीट जीन बैंक की स्थापना

मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों में रंगीनी एवं कुसुमी लाख की उपलब्धता

क्र.	तहसील	जिला	लाख की प्रजाति	मुख्य पोषक वृक्ष
1	सिवनी, बरघट, कुरई	सिवनी	रंगीनी फसल	पलास, बेर
2	बरहसिवनी, लालबर्रा, लामटा किरनापुर, परसावाड़ा, कटंगी	बालाघाट	रंगीनी फसल	पलास
3	मण्डला, नैनपुर, मोहगाँव, बिछिया	मण्डला	रंगीनी फसल	पलास
4	गोहपारू	शहडोल	रंगीनी फसल	पलास
5	जैतहरि, अनुपपुर, वेंकटनगर	अनुपपुर	रंगीनी फसल	पलास
6	बनखेड़ी	होशंगाबाद	कुसुमी फसल	कुसुम
7	चीचली	नरसिंहपुर	कुसुमी फसल	कुसुम
8	तामिया, जुनारदेव	छिंदवाड़ा	कुसुमी फसल	कुसुम

इस केन्द्र द्वारा विभिन्न लाख प्रजातियों के बाह्य स्थलीय (ex-situ) संरक्षण के लिए संस्थान में लाख कीट फील्ड जीन बैंक की स्थापना वर्ष 2015 में की गई है, जिसके माध्यम से सभी प्रकार की लाख प्रजातियों का संरक्षण किया जा रहा है। लाख प्रजाति के अंत:स्थलीय (in-situ) संरक्षण एवं लाख को ग्रामीण/आदिवासियों की आजीविका का साधन बनाने के लिए मध्यप्रदेश में लाख उत्पादन की वैज्ञानिक विधि से कृषि के प्रशिक्षण हेतु कार्यशालायें आयोजित की जा रही हैं। इस दौरान कृषकों के पास उपलब्ध पलास, बेर, तथा कुसुम आदि प्रजातियों के वृक्षों पर लाख लगवाकर किसानों को सफलतापूर्वक लाख उत्पादन करने हेतु प्रेरित किया जा रहा है।

कुसुम लाख कीट की परिपक्व अवस्था

अनुसन्धान विस्तार वृत्त ग्वालियर में पौधशाला का निरीक्षण एवं मार्गदर्शन

अनुसन्धान विस्तार वृत्त इंदौर में वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन तकनीक पर चर्चा

अनुसन्धान विस्तार वृत्त सिवनी में रोपणी का निरक्षण एवं मार्गदर्शन

1अनुसन्धान विस्तार वृत्त बैतूल में क्षेत्रीय विभागीय अमले को प्रशिक्षण

अनुसंधान एवं विस्तार वृत्तों के माध्यम से संचालित लघु अनुसंधान कार्यों पर तकनीकी सलाह एवं मार्गदर्शन

मध्यप्रदेश वन विभाग मुख्यालय, भोपाल अनुसंधान/विस्तार एवं लोक वानिकी म.प्र. भोपाल द्वारा सभी मुख्य वन संरक्षक, अनुसंधान एवं विस्तार वृत्तों, को राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर को अपना–अपना अनुसंधान प्रस्ताव प्रेषित कर तकनीकी सलाह एवं परियोजना क्रियान्वयन में समय–समय पर मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु निर्देशित किया गया है। अनुसंधान परियोजनाओं के समस्त शोध कार्य संस्थान के निर्देशन में संचालित किये जावेंगे। शोध से संबंधित समस्त आंकड़े अनुसंधान वृत्त द्वारा संस्थान को प्रस्तुत किये जावेंगे, जिसके आधार पर शोध परिणामों के संबंध में निर्णय तथा अनुसंधान कार्यों का रिसर्च पेपर भी संस्थान स्तर से प्रकाशित किया जावेगा।

इस कार्य को सुचारू रूप से निरंतर संपन्न करने हेतु राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के वैज्ञानिक तथा वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारियों को विभिन्न अनुसंधान विस्तार वृत्तों के प्रभारी बनाये गये हैं। सभी प्रभारियों द्वारा सौंपे गये अनुसंधान वृत्तों का दौरा कर प्रचलित अनुसंधान परियोजनाओं में तकनीकि मार्गदर्शन दिया गया है। कार्य का प्रतिवेदन अपर प्रधान मुख्य वनसंरक्षक, (अनुसंधान, विस्तार एवं लोक वानिकी) मध्यप्रदेश भोपाल को भेजा गया है।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में बैम्बूसीटम की स्थापना

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में बैम्बूसीटम की अहम भूमिका है। बैम्बूसीटम विद्यार्थियों, कृषकों एवं अन्य संबंधित लोगों को बांस की पहचान एवं बांस के बहुमुखी उपयोग संबंधी जानकारी प्रदाय करती है। संस्थान के बैम्बूसीटम में बांस की 47 प्रजातियां उपलब्ध हैं। ये प्रजातियाँ म.प्र., केरल एवं उत्तर पूर्व प्रदेशों तथा केरल वन अनुसंधान संस्थान से एकत्रित की गई हैं।

प्रशंसा एवं पारितोषिक

प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री मनोज कुमार सपरा द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण एवं वनकर्मियों के सराहनीय योगदान के लिए सम्मान

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री मनोज कुमार सपरा ने वन विश्राम गृह परिसर, भोपाल में ध्वजारोहण किया। श्री सपरा ने अधिकारियों तथा कर्मचारियों को स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी। उन्होंने वन एवं वन्य प्राणियों के संरक्षण और विकास में सराहनीय योगदान के लिए 48 वनकर्मियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर प्रबंध संचालक, राज्य वन विकास निगम श्री जे.के. मोहंती, प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्यप्राणी श्री शहबाज अहमद, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (उत्पादन) डॉ. यू. प्रकाशम, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (अनुसंधान विस्तार एवं लोक वानिकी) श्री एस.के. मण्डल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (कार्य आयोजना) श्री एस.पी. रयाल सहित वरिष्ठ वन अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित थे।

वन्यप्राणी संरक्षण में उल्लेखनीय योगदान के लिए सहायक वन संरक्षक बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान श्री ऋषि कुमार मिश्रा, वनक्षेत्रपाल पन्ना टाइगर रिजर्व श्री राजेन्द्र सिंह नरगेश, वनपाल पेंच टाइगर रिजर्व श्री सतिराम उईके, वनपाल टी. एस.एफ. इंदौर श्री भेरूलाल चौधरी, सुपरवाइजर सतपुड़ा टाइगर रिजर्व होशंगाबाद श्री सियाशरण मिश्रा, वनरक्षक कान्हा टाइगर रिजर्व श्री आसिफ हुसैन कुरैशी, वनरक्षक संजय टाइगर रिजर्व श्री विद्यासागर कोल तथा सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारी होशंगाबाद श्री अखिलेश गंगारे को सम्मानित किया गया।

राज्य वन विकास निगम के आठ कर्मचारी – वनपाल श्री विजय कुमार पालीवाल, वनरक्षक श्री सत्येन्द्र त्रिपाठी तथा श्री अरविन्द्र कुमरे, सहायक परियोजना क्षेत्रपाल श्री ललित कुमार दुबे, श्री प्रफुल्ल मेश्राम, श्री एम.आर. अड़लक, श्री उमादत्त रजक तथा श्री रामगोपाल रजक को सम्मानित किया गया।

भोपाल वनमंडल में गठित क्रेक टीम में पदस्थ वनपाल श्री प्रमोद मालवीय, श्री बुधराज भागवत तथा श्रीमती एलिस माइकल, वनरक्षक श्री सुबोध त्यागी, श्री आरिफ मोहम्मद खान, श्री रामयश मौर्य, कुमारी मंजू मेहरा, श्री राजेश पाण्डे तथा श्री ओमप्रकाश शुक्ला, वाहन चालक मो. हनीफ खान, स्थाई कर्मी श्री ग्यारसी लाल जाटव तथा श्री रघुराम देवहरे को वन्यप्राणियों की सुरक्षा एवं उनके बचाव कार्यों में सराहनीय योगदान देने के लिए सम्मानित किया

गया। इसी प्रकार उड़न दस्ता वनमंडल भोपाल में पदस्थ उपवन क्षेत्रपाल श्री राजकिरण चतुर्वेदी, वनरक्षक श्री महेश चौहान, श्री नागेंद्र मिश्रा तथा देवेंद्र शर्मा, स्थाईकर्मी श्री चंद्रिका प्रसाद कटारे तथा श्री शारदा सिंह परिहार को भी सम्मानित किया गया।

भोपाल वन मण्डल में पदस्थ वनक्षेत्रपाल श्रीमती उषा मिश्रा, परिक्षेत्र अधिकारी श्री सुनील वर्मा, वनरक्षक श्री मंशाराम टेकवार, श्री रामस्वरूप कुमरे तथा श्री आमोद तिवारी, स्थाईकर्मी श्री नारायण सिंह मीणा तथा श्री कृष्णकांत मिश्रा, कम्प्यूटर ऑपरेटर श्री आसिफ उद्दीन कुरैशी तथा सहायक लोक अभियोजन अधिकारी भोपाल श्रीमती सुधा विजय सिंह भदौरिया को सम्मानित किया गया।

सीहोर वनमंडल में पदस्थ परिक्षेत्र अधिकारी श्री सभाराज सिंह परिहार, रायसेन वनमंडल में पदस्थ वनक्षेत्रपाल श्री वीरेंद कुमार, राजगढ़ वन मंडल के उप वनक्षेत्रपाल श्री देवकरण भिलाला, अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त भोपाल के उपवन क्षेत्रपाल श्री हरिशंकर पाण्डेय तथा वनपाल श्री राजेश नामदेव को सम्मानित किया गया।

प्रशस्ति पत्र एवं पदक

अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त खण्डवा में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर श्री विजय कुमार सोनी, रोपणी प्रभारी बोरगाँव को दुर्लभ प्रजातियों की रोपणी तकनीक में नवाचार, श्री ब्रजेश नाहरवाल, रोपणी प्रभारी आशापुर को उकृष्ट सागौन पौधा तैयारी, श्री आलोक सिंह देवड़ा वन रक्षक को कृषक समृद्धि योजना के क्रियान्वयन में सराहनीय योगदान के लिए तथा श्री तुलसीराम देवराम कृषक को किसान लक्ष्मी योजना में खमेर के सफल वृक्षारोपण कार्य के लिए श्री अनिल कुमार नागर, मुख्य वन संरक्षक, अनुसंधान विस्तार वृत्त, खण्डवा द्वारा प्रशस्ति पत्र से पुरस्तुत किया गया।

श्री अनिल कुमार नागर, मुख्य वन संरक्षक, अनुसंधान विस्तार वृत्त, खण्डवा द्वारा उत्कृष्ट कार्यों के लिए कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र वितरण करते हुए।

पुरस्कार और पदक– सर्वश्रेष्ठ शिविर और कूनोमंडल में स्वतंत्रता दिवस 2018 के परेड बटालियन के लिए

पदोन्नति

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति (जुलाई-सितम्बर 2018)		
क्र.	अधिकारी का नाम	पदोन्नति उपरान्त नवीन पदस्थिति
1	श्री एम. के. सपरा	प्र.मु.व.स. एवं वन बल प्रमुख, मध्यप्रदेश
2	श्री एस. के. मण्डल	प्रधान मुख्य वन संरक्षक, भोपाल (अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी)
3	श्री यू. के. सुबुद्धि	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम, भोपाल (प्रतिनियुक्ति पर)
4	श्री संजय शुक्ला	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज संघ, भोपाल (प्रतिनियुक्ति पर)
5	श्री वी.एन.	अम्बाडे अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, प्रशासन अकादमी, भोपाल
6	श्री संजय मोहर्रिर	मुख्य वन संरक्षक, विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी, म.प्र. शासन, वन विभाग, भोपाल (प्रतिनियुक्ति से वापस लेते हुए)।
7	श्री आर.एस.	कोरी मुख्य वन संरक्षक, अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त, जबलपुर (प्रतिनियुक्ति से वापस लेते हुए)
8	श्री आर.पी. राय	मुख्य वन संरक्षक, वन्य प्राणी, पश्चिम इन्दौर
9	श्री संजय श्रीवास्तव	मुख्य वन संरक्षक, अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त, बैतूल
10	श्री मनोज अर्गल	मुख्य वन संरक्षक, अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त, इन्दौर
11	श्री के.के. गुरवानी	मुख्य वन संरक्षक, छिन्दवाड़ा वृत्त
12	डॉ. एस.पी. तिवारी	मुख्य वन संरक्षक, भोपाल वृत्त
13	श्री सुनील कुमार सिंह	मुख्य वन संरक्षक एवं क्षेत्र संचालक, सतपुड़ा टाईगर रिजर्व, होशंगाबाद
14	श्री के.एस. भदौरिया	मुख्य वन संरक्षक एवं क्षेत्र संचालक, पन्ना टाईगर रिजर्व, पन्ना
15	श्री आर.एन. वर्मा	मुख्य वन संरक्षक, अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त, रीवा
16	श्री ए.के.एस. चौहान	वन संरक्षक, कार्यालय प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, भोपाल
17	श्री राजीव मिश्रा	व.म.अ. सतना (सा.)
18	श्री पी.जी. फुलझेले	वन संरक्षक, कार्य आयोजना, सिवनी
19	श्री डी.के. पालीवाल	वन संरक्षक, कार्य आयोजना, शिवपुरी
20	श्री महेन्द्र सिंह सिसोदिया	वन संरक्षक, इन्दौर (सा.) वनमण्डल
21	श्री लखन लाल उइके	वन संरक्षक बड़वानी (सा.) वनमण्डल
22	श्री अनिल कुमार सिंह	वन संरक्षक हरदा (सा.) वनमण्डल
23	श्री बृजेन्द्र झा	वन संरक्षक सीधी (सा.) वनमण्डल
24	श्री एस. एस. उद्दे	वन संरक्षक, पूर्व छिन्दवाड़ा (सा.) वनमण्डल
25	श्री पी. पी. टिटारे	वन संरक्षक, पूर्व मण्डला (सा.) वनमण्डल
26	श्री अतुल कुमार मिश्रा	अपर सचिव, म.प्र. शासन, वन विभाग, भोपाल (प्रतिनियुक्ति पर)

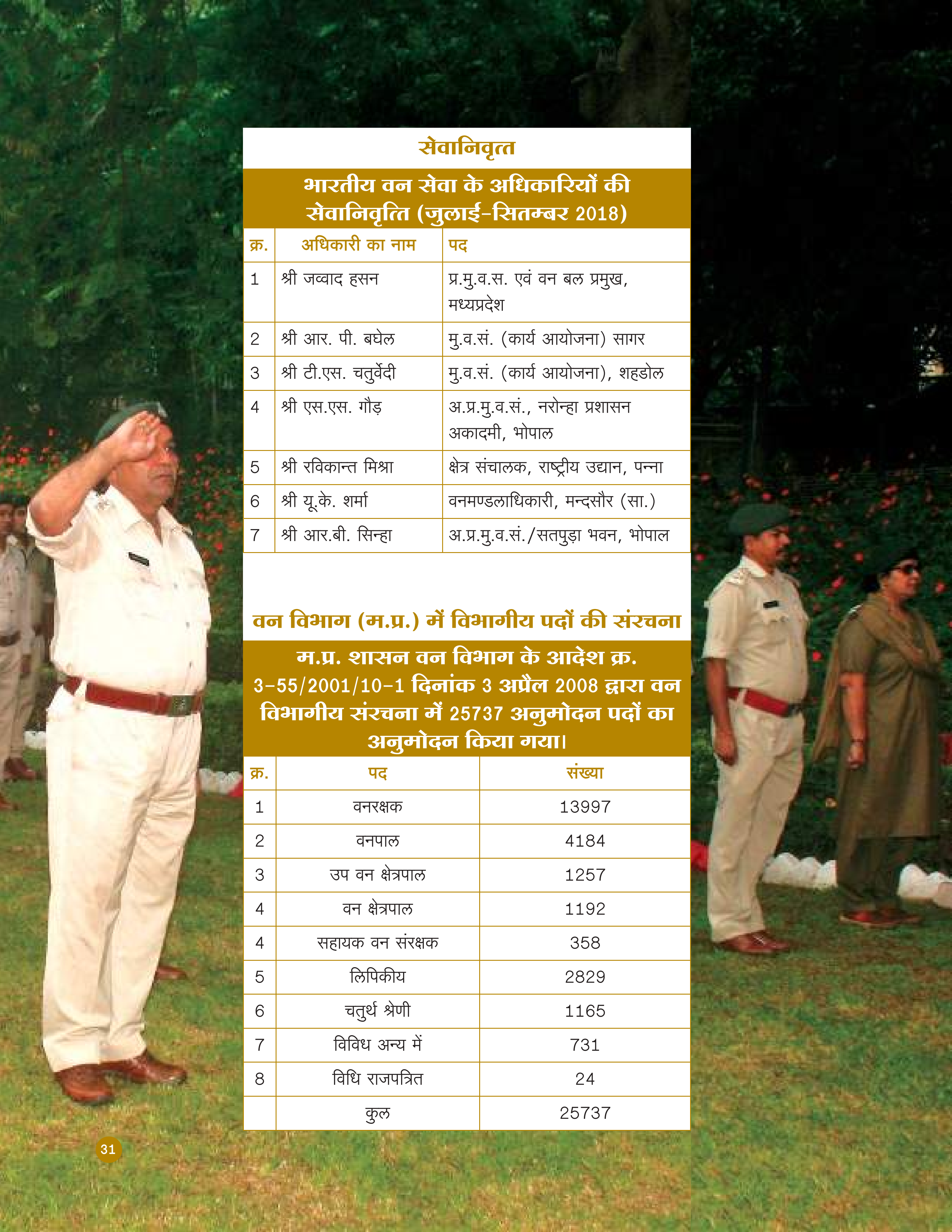

सेवानिवृत्त

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की सेवानिवृत्ति (जुलाई-सितम्बर 2018)

क्र.	अधिकारी का नाम	पद
1	श्री जव्वाद हसन	प्र.मु.व.स. एवं वन बल प्रमुख, मध्यप्रदेश
2	श्री आर. पी. बघेल	मु.व.सं. (कार्य आयोजना) सागर
3	श्री टी.एस. चतुर्वेदी	मु.व.सं. (कार्य आयोजना), शहडोल
4	श्री एस.एस. गौड़	अ.प्र.मु.व.सं., नरोन्हा प्रशासन अकादमी, भोपाल
5	श्री रविकान्त मिश्रा	क्षेत्र संचालक, राष्ट्रीय उद्यान, पन्ना
6	श्री यू.के. शर्मा	वनमण्डलाधिकारी, मन्दसौर (सा.)
7	श्री आर.बी. सिन्हा	अ.प्र.मु.व.सं./सतपुड़ा भवन, भोपाल

वन विभाग (म.प्र.) में विभागीय पदों की संरचना

म.प्र. शासन वन विभाग के आदेश क्र. 3-55/2001/10-1 दिनांक 3 अप्रैल 2008 द्वारा वन विभागीय संरचना में 25737 अनुमोदन पदों का अनुमोदन किया गया।

क्र.	पद	संख्या
1	वनरक्षक	13997
2	वनपाल	4184
3	उप वन क्षेत्रपाल	1257
4	वन क्षेत्रपाल	1192
4	सहायक वन संरक्षक	358
5	लिपिकीय	2829
6	चतुर्थ श्रेणी	1165
7	विविध अन्य में	731
8	विधि राजपत्रित	24
	कुल	25737

विभागीय समाचार एवं गतिविधियां

मोर का मांस बेचने वाले तस्कर भोपाल में गिरफ्तार

राजधानी भोपाल में राष्ट्रीय पक्षी मोर का शिकार कर उसके मांस को बेचने वाले दो आरोपियों को मांस के साथ रंगे हाथों पकड़ा गया है। वे भोपाल के कबाड़ खाना क्षेत्र में फारूख कबाड़ी को मांस की डिलिवरी देने आए थे। सौदा 12 हजार रुपये में तय हुआ था। इस मामले से जुड़े चार अन्य आरोपियों को भी गिरफ्तार किया गया है। इनके पास से मोर पकड़ने व उनका परिवहन करने में उपयोग की दो बाइक व एक ऑटो भी जब्त किया गया है। ये मोर बैरसिया के भोजपुरा जंगल से पकड़े गए थे जिन्हें 1800 रुपये में खरीदा गया था। इस कार्रवाई को वन विभाग की उड़नदस्ता टीम के डिप्टी रेंजर आर.के. चतुर्वेदी के नेतृत्व में की गई थी। इसमें महबूब मोहम्मद खान, नागेन्द्र मिश्रा, देवेन्द्र शर्मा, शरदा सिंह परिहार, चंद्रिका कटारे समेत दो दर्जन वनकर्मी शामिल थे।

वन अपराध प्रकरण क्रमांक 28060/15 दि. 10.07.18 टीएसएफ, सागर द्वारा आदतन सांप पकड़ने वाले 05 व्यक्तियों को गिरफ्तार कर माननीय विशेष न्यायालय टी.एस.एफ. इन्दौर के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

वन अपराध प्रकरण क्रमांक 11614/20 दि. 20.09.2014 बालाघाट एवं प्रकरण क्रमांक 38992/16 दि. 20.05.2015 पेंच टाइगर रिजर्व, सिवनी में राज्य स्तरीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स एवं क्राईम ब्रांच एस.टी.एफ भुवनेश्वर की सयुक्त कार्रवाई कर अनुसूची–1 में दर्ज दुर्लभ वन्यजीव प्रजाति के वन्यप्राणी पेंगोलिन के अवैध व्यापार में लिप्त विभिन्न राज्यों से 06 अंतर्राष्ट्रीय गिरोह के आरोपियों को गिरफ्तार किया गया।

सामसुद्दीन खान

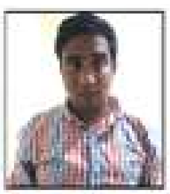

अल्लारख्खा खान

लालटलेन कुंगा

रियाज खान

रब्बानी खान

अमीर हुसैन लश्कर

वन अपराध प्रकरण क्रमांक 28060/08 दि. 02.11.17 टीएसएफ, इन्दौर में इनामी फरार आरोपी पवन को ग्राम टाकली महाराष्ट्रा से गिरफ्तार कर माननीय विशेष न्यायालय टीएसएफ इन्दौर के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

वन अपराध प्रकरण क्रमांक 28060/02 दि. 05.05.17 टीएसएफ, सागर में फरार आरोपी तपस बसक उर्फ रौनी को कई दिन तक रैकी कर कोलकाता से गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय अल्लीपोर कोलकाता के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

वन अपराध प्रकरण क्रमांक 28060/13 दिनांक 10.04.2018 में 05 हजार के इनामी फरार आरोपी असगर खान को क्षेत्रीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स, सागर द्वारा दिनांक 11.09.2018 को औपचारिक गिरफ्तार कर सी.जी.एम. विशेष न्यायालय टाइगर स्ट्राइक फोर्स, सागर के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

मोर तस्कर की गिरतारी

दिनांक 1.8.2018 को ग्राम मुरारिया तहसील लटेरी, जिला–विदिशा में हाकिम पिता–अलादीन से तीन जिंदा मोर को बरामद किया गया। वो इसे बेचने की फिराक में था। इसके लिए वन विभाग के कर्मचारी नकली खरीददार बनकर हाकिम के पास गये। सौदा पक्का होने और मोर के हस्तांतरण के बाद उसे रंगे हाथों पकड़ लिया गया और वन अपराध प्रकरण पंजीबद्ध किया गया। इस

आपरेशन में शामिल वनकर्मियों श्री राजकरण चतुर्वेदी उप वन क्षेत्रपाल, श्री आसिफ हसन मानसेवी वन्य प्राणी अभिरक्षक, श्री नागेन्द्र मिश्रा वन रक्षक, श्री देवेन्द्र शर्मा वन रक्षक, श्री महेश चौहान वन रक्षक, श्री शारदा सिंह परिहार स्थाई कर्मी, श्री चन्द्रिका प्रसाद करारे स्थाईकर्मी परिक्षेत्र उड़नदस्ता भोपाल को 15 अगस्त 2018 को स्वतंत्रता दिवस के मौके पर प्रशस्ति पत्र एवं शील्ड से सम्मानित किया गया

अनुकरणीय पहल

बुंदेलखंड क्षेत्र में ट्री एम्बुलेंस सेवा की शुरुआत

ट्री एम्बुलेंस उन लोगों तक पहुँच रहे हैं जिन्हें पौधों की देखभाल करने में दिक्कत आ रही है।

ट्री एम्बुलेंस छतरपुर जिले के बुंदेलखंड क्षेत्र में उन लोगों तक पहुँच रहे हैं जिन्हें पौधों की देखभाल करने में दिक्कत आ रही है। ये सेवाएं मुफ्त हैं। ट्री एम्बुलेंस के साथ एक पौधा विशेषज्ञ और एक सहायक बागवानी के औजारों, पानी, खाद और कीटनाशक से लैस होते हैं।

यह सेवा संगम सेवालय संस्था के कुछ उत्साही सदस्यों द्वारा शुरू की गई है जो बुंदेलखंड क्षेत्र के वातावरण क्षरण से चिंतित हैं और पौधों की सुरक्षा करता चाहते हैं। संस्था के संचालक श्री विपिन अवस्थी ने कहा कि यह मिशन उन्होंने अपने पिता की याद में तीन वर्ष पूर्व शुरू किया था और तभी से यह संस्था इस जिले में पौधरोपण का कार्य कर रही हैं।

उन्होंने पाया कि 60–70 प्रतिशत पौधे इंफेक्सन के कारण मर जाते हैं। उन्होंने यह भी पाया कि सभी लोगों को पौधों की उपयुक्त देखभाल करने में असक्षम है, अतः उन्हें एक विशेषज्ञ सलाह की जरूरत होती हैं।

बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व की पतौर रेंज में मिले थे दो अव्यस्क शावक, गोद की मां का दूध पीकर बड़े हुए।

जंगल के निर्दयी कानून के हिसाब से यहां कमजोरों के लिए कोई स्थान नहीं होता है। बांधवगढ़ में दो बाघ शावकों को उसकी मां ने इसलिए छोड़ दिया, क्योंकि वे कमजोर थे। जंगल में उनका बच पाना मुश्किल था लेकिन वे वनकर्मियों के नज़र में आ गए। इसके बाद उन्हें बचाने का अभियान शुरू हुआ। इन्हें डमी माँ के जरिए पाला गया। अब आठ माह बाद वे स्वस्थ हैं और इन्हें जंगल में छोड़ने की तैयारी चल रही है। दोनों शावकों को जब मुख्यालय लाया गया तब इन्हें पहले बोतलों से बकरे का दूध पिलाया गया। इसमें शावकों में संक्रमण फैलने का खतरा था। इसी बीच डमी बाघिन से फीडिंग कराने का तरीका सूझा। बाजार से 150 रु. का पुतला खरीदा गया जिसके सहारे शावकों को फीडिंग कराई गई। अब दोनों डाइट में चिकन ले रहे हैं। विशेषज्ञों की सलाह पर शावकों को फ्लूड थेरेपी दी गई।

दोनों शावकों के लिए रिजर्व प्रबंधन ने मिनी इन्कलोजर की व्यवस्था की है जिसे जंगल का रूप देने की कोशिश की गई है। इस बाड़े में दोनों उछल–कूद कर रहे हैं शावकों का वजन अब 50 किलो हो चुका है। जब दोनों मिले थे तब उनके आंख भी नहीं खुली थीं।

खुले जंगल में छोड़ने के लिए दे रहे मुर्गा व बकरा मारने की ट्रेनिंग–शावकों की देख–रेख करने वाले रिजर्व के डॉ. नितिन गुप्ता बताते हैं कि जंगल में ये अक्सर होता है कि माँ अपने कमजोर बच्चे को लावारिश छोड़ देती है। अब इन शावकों को दो साल बाद फ्री रेंज में छोड़ा जाएगा। इसके लिए दोनों को मुर्गा एवं बकरा मारने की ट्रेनिंग दी जा रही है। बाड़े में पहले मुर्गा छोड़े गए, जिन्हें दोनों ने मार लिया। अब दोनों बकरा भी मारने लगे हैं। कुछ महीने बाद बाड़े का दायरा बढ़ाकर पालतू मवेशियों के बछड़े मारने की ट्रेनिंग दी जाएगी। जब दोनों वयस्क हो जाएंगे तब उन्हें जंगल में छोड़ा जाएगा।

हरित साहित्य

वृक्ष गंगा रैली, सागर वन विस्तार, गायत्रीपीठ सदस्यों के साथ वृक्ष गंगा अभियान काँवड़ यात्रा

जय जय शिव शंकर।
पेड़ लगाओ जमकर।।

अमृत बांटे, करें विष पान।
वृक्ष स्वयं शंकर भगवान।।

साँसे हो रहीं कम।
आओ वृक्ष लगाएं हम।।

वृक्षारोपण पुण्य महान ।
एक वृक्ष दस पुत्र समान।।

वन रक्षा की करते टेर।
भोले हिरन भयानक शेर।।

तीरथ हज करके आओ।
भोज के बदले वृक्ष लगाओ।।

आओ मिलकर हम सब गाएं।
वृक्ष लगाएँ – वृक्ष लगाएँ ।।

उजड़ी धरती करे पुकार।
वृक्ष लगाकर करो श्रृंगार।।

बच्चा एक वृक्ष हजार।
सुखी रहेगा घर संसार।।

वृक्ष नहीं अपना फल खाते।
बिना मूल्य जग को दे जाते।।

देते जो जीवन अनुदान।
करो वृक्ष का तुम सम्मान।।

वृक्षों का जब होगा परिवेश।
तभी बढ़ेगा भारत देश।।

आओ मिलकर वृक्ष लगाएं।
इस धरती को स्वर्ग बनाएँ।।

वृक्ष और हरियाली होगी।
जीवन में खुशहाली होगी।।

मंदिरों में बंटे अब यही प्रसाद ।
एक पौधा और थोड़ी सी खाद।।

अब मस्जिद में यही अजान।
दरख़्त लगाएं हर इंसान।।

अब गूंजे गुरुद्वारों में वाणी।
दे हर बंदा पौधों को पानी।।

सभी चर्च दें अब यह शिक्षा।
वृक्षारोपण यीशु की इच्छा।।

“मानसरोवर सूख गया तो ...”

‘रोपण’ की तुलना में हमने, ‘वनसंहार’ किया है ज्यादा,
वृक्षहीन हो रही धरा पर कहाँ देव के ‘वास’ मिलेंगे।।
जहाँ न दिन में धूप पहुँचती
वहाँ मरूस्थल आज बचे हैं,
आगामी पीढ़ी को देने
खुद हमने षड़यंत्र रचे हैं,
ये सूखा, भूकंप, सुनामी, मानव निर्मित विपदायें हैं,
‘नियति व्यवस्था’ को छेड़ा, तो ऐसे ही संत्रास मिलेंगे।
कूड़ा कर्कट भरे जा रहे
अलस भोर से शाम ढ़ले तक,
जल के हर संसाधन में तो
गाद भरी है गले गले तक,
नदियाँ भूल रही हैं कल–कल, नहीं बजाते घाट बाँसुरी,
वीरानी के द्वारा लिक्खे गये नये इतिहास मिलेंगे।
धुआँ चिमनियों का पी पीकर
सभी फेफड़े जाम हो गये,
दुर्लभ नहीं पहाड़ी छोड़ी
घाट – घाट नीलाम हो गये,
‘प्राण–वायु’ की उत्पादकता के सभी रास्ते बंद कर दिये,
फिर तो केवल ‘जेठ’ मिलेंगे कैसे सावन मास मिलेंगे।
है बिसूरता कहीं धावड़ा
सागवान के घाव हरे हैं,
नहीं बुलाती वनपाखी अब
झुरमुट के सब बाँस झरे हैं,
याद दिलाती रहती है ये चेताती रहती है कुदरत,
मान सरोवर सूख गया तो सोचो क्या कैलाश मिलेंगे।।

रत्नदीप खरे
वनविस्तार अधिकारी झाबुआ

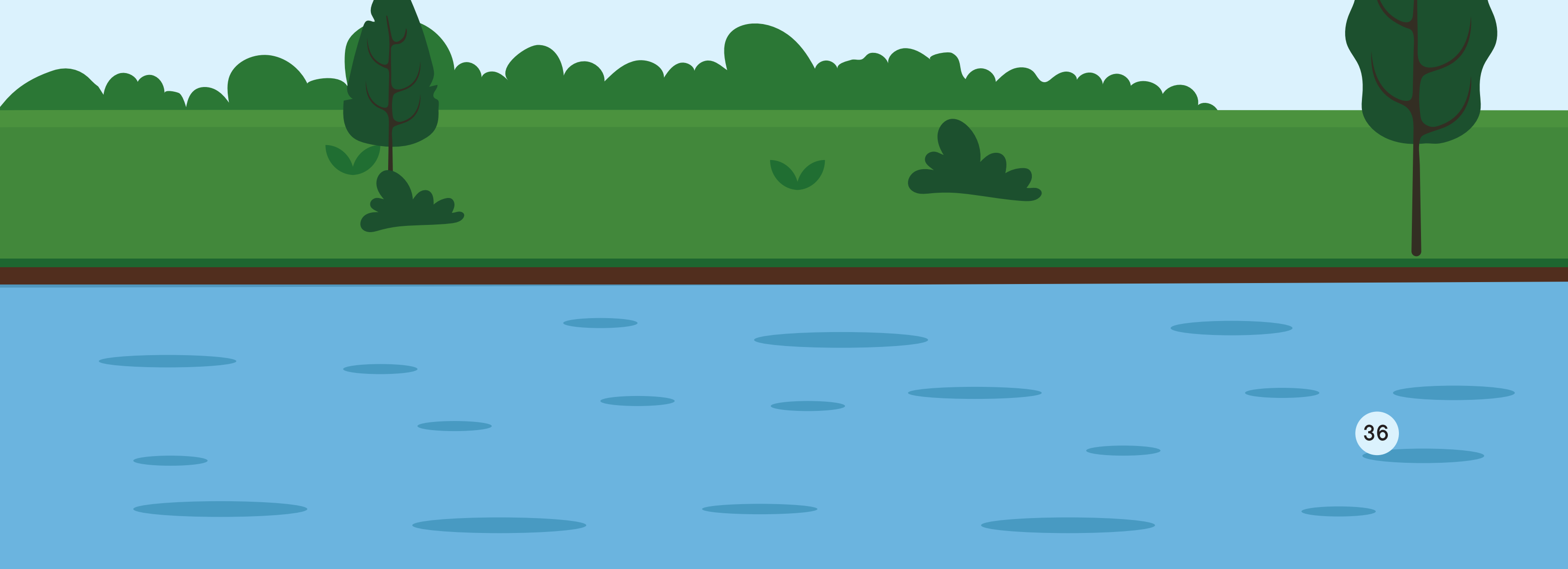

विविधा

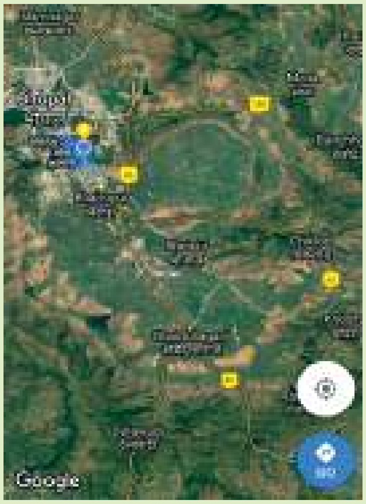

ओम वैली, भोपाल

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के रहस्य अब सामने आ रहे हैं। वैज्ञानिकों की मानें तो भोपाल में हजारों साल पुरानी एक ओम वैली है जिसका आकार मानसून के आने पर उभर कर सामने आ जाता है। गूगल के द्वारा छोड़े गये उपग्रह की तस्वीरों से ये रहस्य का पता चला अब इस पर वैज्ञानिक शोध हो रहा है।

ये आकार साल के बाकी समय नहीं दिखाई देता है लेकिन जैसे ही मानसून आता है, जलाशय और हरियाली के बढ़ने से ओम का आकार उभर आता है। इस आकार के मध्य में भोपाल का भोजपुर मंदिर है, इस मंदिर का वैज्ञानिक महत्व भी है। भोजपुर मंदिर में भारत का सबसे बड़ा शिवलिंग स्थित है।

कान्हा के छात्रों का संसद भ्रमण

यह एक ऐतिहासिक पल था जब कान्हा टाइगर रिजर्व में कान्हा बफर क्षेत्र के गावों के छात्रों को संसद भवन में भ्रमण का मौका मिला और उनकी मुलाकात प्रधानमंत्री एवं लोकसभा अध्यक्ष से भी हुई। यह यात्रा श्री मन्धार महाजन और श्री एस.के. खरे, एसिसटेन्ट डायरेक्टर के सहयोग से सम्पन्न हो पाया।

पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधारोपण-दम्पत्ति वन महोत्सव

दिनांक 12 अगस्त, 2018 को कटारा हिल्स क्षेत्र में स्थित इकॉलोजिकल पार्क परिसर में दम्पत्ति वन महोत्सव का आयोजन हुआ। इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव वन श्री के.के. सिंह, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री मनोज कुमार सपरा सहित वरिष्ठ वन अधिकारियों ने परिवार के साथ पौधा रोपण किया।

वन विभाग द्वारा नगर वन के रूप में विकसित इस क्षेत्र में सभी तरफ हरियाली दिखती है। जनमानस स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हुआ है। उनके लिए यह आदर्श स्थल है। यहां आरोग्यम केन्द्र स्थापित किया गया है जहां आयुर्वेदिक औषधियां उपलब्ध कराई जाती है। परिसर में मनोरंजन सह व्यायाम केन्द्र स्थापित किया गया है। इसी प्रकार एक्यूप्रेशर पथ, पैदल चलने का मार्ग तथा वाटिका के साथ एक छोटा सा झरना भी बनाया गया है।

इकॉलोजिकल पार्क परिसर में दम्पत्ति वन महोत्सव के तहत लगभग 400 पौधे लगाये गये। इस अवसर पर बड़ी संख्या में ग्रामीण जन भी उपस्थित रहे।

पौधा लगाते अपर मुख्य वन सचिव श्री के.के. सिंह

पौधा लगाते श्री एवं श्रीमती एम.के. सपरा

पौधा लगाते श्री एवं श्रीमती एस.पी. तिवारी

पौधा लगाते हुए श्री यू प्रकाशम, पी.सी.सी.एफ. (उत्पादन)

पौधा लगाते श्री एवं श्रीमती एस.पी. रयाल

अखबारों के आइनों से

पीपुल्स समाचार 31 AUG 2016

शेर-चीते के बाड़े में इंसानों के लिए भी होगा एक पिंजरा

दिल्ली: जान बचाने खुद को कर सकेंगे कैद

नवदुनिया 31 AUG 2016

तेंदुपत्ता संग्राहकों को आज बांटा जाएगा 495 करोड़ रुपए बोनस

मुरैना में रेत माफिया ने डिप्टी रेंजर को ट्रैक्टर-ट्रॉली से कुचलकर मार डाला

वन चेकपोस्ट के सामने सुबह 10:28 बजे की घटना, आरोपी ड्राइवर गिरफ्तार

पौधरोपण से नर्मदा ने ओढ़ी हरि...

कई सहायक नदियों को मिला ...

पिछले साल 2 जुलाई को 70 हजार लोगों ने किया 2 करोड़ पौ...

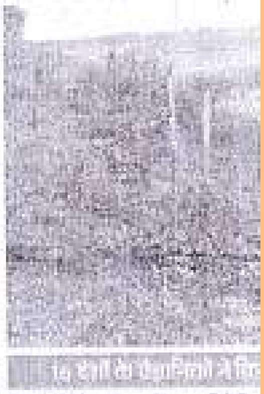

नवभारत 28 AUG 2016

अब बिना टीपी के बांस का हो सकेगा परिवहन

वृक्षों की श्रेणी से बांस को हटाया गया

हरिभूमि 12 SEP 2016

वन शहीदों की याद में शहर में बनाया जाएगा स्मारक

शहीदों के परिजनों का सम्मान किया

छतरपुर के विपिन ने बनाई ट्री एंबुलेंस, इसमें रहता है जरूरी सामान, अब तक 2000 से ज्यादा पेड़ों का इलाज, 1123 नए पौधे लगाए, रोजाना देख-रेख

ट्री एंबुलेंस से पेड़ों की सेहत का ख्याल, 18 लोगों की टीम का मकसद कायम रहें वृक्ष

पानी की टंकी से खाद की बोरी तक सब ट्री एंबुलेंस में

अनोखी खबर : बाघों की गणना पर स्टेट फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट, एक साल में 355 बाघ फोटो में कैद

मप्र को 'टाइगर स्टेट' का दर्जा मिलने की उम्मीद बढ़ी

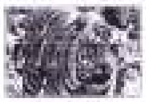

विश्व टाईगर दिवस

कई जिलों की डिमांड पूरी कर रहीं राजधानी की नर्सरी

भोपाल संभाग में होगा 22 लाख पौधों का रोपण, 31 तक 40 लाख का लक्ष्य

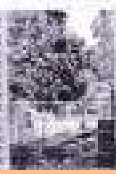

पेड़ों की होगी जियो टैगिंग, मिलेगा बारकोड और पता रहेगी उम्र

भास्कर खास • वन विभाग की हरित वाहन पौधा घर पहुंच सेवा, गोविंदपुरा में सबसे ज्यादा पौधे रोपे गए

हरियाली बढ़ाने ढाई माह में घरों तक पहुंचाए 19,832 पौधे

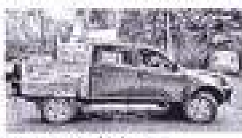

कृषि वानिकी की संभावनाएं एवं सरोकार पर हुआ मंथन

प्रिटोरिया विवि के वैज्ञानिकों ने आईवीएफ तकनीक से हासिल की सफलता

पहली बार टेस्ट ट्यूब से जन्मे शेर के शावक

25 अगस्त को पैदा हुए दोनों शावक

बचाई जा सकेगी अब लुप्त हो रही प्रजातियां

26 देशों में शेरों की प्रजाति विलुप्त की ओर

ऐसे मिली सफलता

दोमुंहे सांप की तस्करी करने वालों की जमानत खारिज

एसटीएफ ने आरोपियों को पकड़ा था

अनूठी पहल : पेड़ों की रक्षा के संकल्प के साथ बांधा रेशमी धागा

फॉरेस्ट सिटी में महिलाओं व अधिकारियों ने वृक्षों से बनाए रिश्ते

फारेस्टर क्रिएटिविटी

कुसुम बीज उपचारण अंकुरण एवं पौध तैयारी एक प्रयोग एवं सफलता रामलिन वनपाल अनुसंधान विस्तार रीवा द्वारा

रामलिन याज्ञिक, वनपाल सन 1998 से वन विभाग की सामाजिक वानिकी शाखा में पदस्थ थे। इन्होंने यहाँ रोपणी कार्य एवं वृक्षारोपण का कार्य उत्कृष्ट श्रेणी का किया है। सन् 2003 से ये रीवा अनुसन्धान की समधिन रोपणी में पदस्थ है। जहाँ पर इनके द्वारा RET एवं संकटापन्न प्रजातियों के बीज संग्रहण,उपचारण एवं रोपणी में अंकुरण तथा पौध तैयारी में विशेषज्ञता हासिल की है। इन्हें कुसुम, बीजा, अचार, मैदा, दहिमन, गरुण,तिन्सा कुम्भी,पापण, लालचन्दन के पौध रोपण में महारत हासिल है।

इनके द्वारा कुसुम बीज पर निम्न कार्य किया गया : –

कुसुम बीज का उपचार

1. सर्वप्रथम एक खाली ड्रम 50 लीटर का लेकर उसमें 10 किलो कुसुम का बीज रख देते हैं। इसके बाद पानी से ड्रम को भर देते हैं। जहाँ सूर्य की रोशनी पड़े वहीं ड्रम को ढक्कन बंद करके रखना चाहिए।

2. 48 घंटे के बाद ड्रम का ढक्कन खोलकर ड्रम के ऊपर जो बीज तैरता रहता है उसे निकाल कर बाहर रखते हैं। इसके बाद पानी बाहर निकाल देते हैं उच्च गुणवत्ता युक्त बीज नीचे तली में बैठ जाता है।

3. इसके बाद पिसा हुआ लकड़ी के कोयला का चूरा 200 ग्राम और फफूंद नाशक ट्राइकोडर्मा 50 ग्राम कुसुम बीज में मिलाते जाते हैं, जब पूर्ण रूप से बीज में मिल जाए तब ढेरी बनाकर भीगा हुआ जूट का बोरा 24 घंटे तक ढक कर रखते हैं। जब बोरा सूखने लगे तब पानी का छिड़काव करना चाहिए। इस प्रकार बीज का उपचारण पूर्ण हो जाता है।

बीज बुबाई कार्य

उपचारित कुसुम बीज का वर्मी कम्पोस्ट पिटों में, रेज्ड– बेडों में पॉलीथिन बैगो में बीज बुबाई का कार्य करते हैं बीज का अंकुरण 8वें दिन से दिखाई देने लगता है। अंकुरण 60 से 80 प्रतिशत तक होता है।

प्रत्यारोपण कार्य

जब पौधे 5 से 10 से.मी. के हो जाए तब बेडों की सिंचाई करने के बाद पौधे निकालकर फफूंदनाशक ट्राइकोडर्मा (5 ली. पानी में 25 ग्राम) के घोल में जड़ों को डुबोकर ट्रांसप्लांट का कार्य करते हैं और झारे से सिंचाई करते हैं। ट्रांसप्लांट पौधे को धूप से बचाने के लिए घास की टटिया चढ़ा देते हैं या ग्रीन नेट से छाया करते हैं। घास की टटिया शाम को निकाल देते है सुबह 8 बजे के बाद फिर से झारे से सिंचाई करने के बाद घास की टटिया चढ़ा देते हैं। इसके बाद तीन दिन तक धूप से बचाते हैं।

सतत् विकास लक्ष्य-विजन 2030

वन प्रबंधन से लक्ष्य प्राप्ति का प्रयास

द्वारा– **रमेश कुमार श्रीवास्तव**
प्रमुख सलाहकार, राज्य योजना आयोग, म.प्र

वैश्विक परिदृश्य में सतत् विकास का इतिहास लगभग 50–60 वर्षें का है। 1987 में पर्यावरण एवं विकास पर गठित ब्रेटलैण्ड कमिशन के रिपोर्ट अवर कॉमन फ्यूचर के अनुसार– सतत् विकास वह लक्ष्य है जो भावी पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की योग्यता के साथ समझौता किये बिना ही वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करें। इस सतत् विकास के संदर्भ में निम्नानुसार दो अवधारणाएं प्रमुख हैं–

1.अन्त: सन्तति समानता (INTRA GENERATION EQUITY) इसके अंतर्गत विकसित एवं विकासशील देषों के बीच आर्थिक दृष्टि से बढ़ती हुई दूरी को कम करने पर ज़ोर दिया गया है।

2.अर्न्तसन्तति समानता (INTRA GENERATION EQUITY) इसके अंतर्गत भावी पीढ़ियों के लिए स्वच्छ प्रद्धति पर्यावरण और संसाधनों को सहेजकर रखने के विषय पर बल दिया जाता है।

कालान्तर में संयुक्त राष्ट्र संघ (यूनाइटेड नेशन्स) द्वारा इस क्रम में मिलेनियम विकास लक्ष्य (MDG) का प्रारम्भ 2001 में किया गया, जो वर्ष 2015 तक चला। इसमें आठ विकास लक्ष्यों को रखा गया था। इस कार्यक्रम की समीक्षा में यह भी तय हुआ कि इसका नाम ''सतत् विकास लक्ष्य'' रखा जाए।

लक्ष्य–01 सब जगह गरीबी का इसके सभी रूपों में अंत करना।

भारत वर्ष में लगभग 30 करोड़ लोग वनों पर अपने जीविकोपार्जन हेतु निर्भर है। वनों के अंदर एवं आसपास निवास करने वाले वनों से विभिन्न उत्पादों से अपनी आजीविका में वृद्धि कर ईंधन, लघु वनोपज यथा तेन्दूपत्ता, नीम बीज, साल बीज, अचार, महुआ तथा विभिन्न औषधियों आदि का विक्रय कर अपनी आय में वृद्धि कर गरीबी दूर कर सकते हैं। दूरस्थ अंचलों में यह आय लगभग 15–20 प्रतिशत तक होती है।

लक्ष्य–02 भुखमरी समाप्त करना, खाद्य सुरक्षा और बेहतर पोषण हासिल करना तथा सतत् कृषि को बढ़ावा देना।

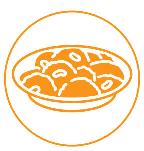

वनों पर आश्रित रहने वाले समुदायों को वनों से विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ मिलते हैं यथा – महुआ, आँवला, अचार, मुनगा, चौलाई, कुन्दरू, काकौड़ा तेन्दू, विभिन्न प्रकार के कंद एवं अन्य जो किसी न किसी रूप में खाद्य सुरक्षा के रूप में विकल्प बन सकते हैं। वनों की उपस्थिति से इनमें पाये जाने वाले पोषक पदार्थ स्थानीय समुदाय को बेहतर पोषण देते हैं। इसके अतिरिक्त वनों की उपस्थिति से मृदा की गुणवत्ता में वृद्धि होती है, तथा मृदा पोषक तत्वों की कमी की पूर्ति होती रहती है। इसके अतिरिक्त जल की उपलब्धता एवं निरंतरता बनी रहती है। घने वन क्षेत्रों में वर्ष भर नमी बनी रहती है जिसके समीप किये जाने कृषि के उत्पादन में सहायता प्राप्त होती है तथा कृषि के उत्पादन सततृता सदैव बनी रहती है।

लक्ष्य–03 स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन तंदुरूस्ती को बढ़ावा देना।

वनों में विभिन्न प्रकार के वृक्ष एवं औषधियां पायी जाती हैं, जिनका प्रयोग आयुर्वेदिक, यूनानी एवं होम्योपैथी चिकित्सा में होता है। प्राकृतिक चिकित्सा, कास्मेटोलॉजी एवं सौन्दर्यीकरण अन्य में भी इन पारम्परिक औषधियों का उपयोग किया जाता है। ग्रामीण अंचलों में संचालित आंगनबाड़ियों एवं प्राथमिक शालाओं में इन औषधियों की प्रजातियों का रोपण कर बच्चों के प्रारम्भिक अवस्था में ही लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार वनों के वैज्ञानिक प्रबन्धन से इनकी उपलब्धता बनाये रख सकते हैं, जो एक ओर तो स्थानीय रूप से स्वास्थ्य में योगदान देगा।

लक्ष्य–04 समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन शिक्षा प्राप्ति के अवसरों को बढ़ावा देना।

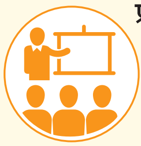

यद्यपि इस लक्ष्य में वन प्रत्यक्ष रूप से योगदान नहीं दे सकता किन्तु ग्रामीण अंचलों विशेषतया दूरस्थ वनांचलों में जहाँ शिक्षा की पहुँच कमजोर है, इन स्थानों पर रहने वाले लोगों तथा जागरूक एवं इच्छुक वनकर्मियों के माध्यम से शिक्षा में जागरूक एवं इच्छुक वनकर्मियों के माध्यम से शिक्षा में आंशिक रूप से सहायता की जा सकती है। साथ ही परम्परागत शिक्षा के साथ–साथ प्राकृतिक एवं पर्यावरण शिक्षा दी जाये तो इस क्षेत्र के लोग पर्यावरण संरक्षण के दूत बन सकते हैं तथा वनों के संरक्षण से स्थानीय लोगों को हमेशा लाभ प्राप्त होता रहेगा।

लक्ष्य–05 लैंगिक समानता हासिल करना और सभी महिलाओं और बालिकाओं का सशक्तिकरण करना।

वनों के प्रबंधन एवं वनोत्पादों के विषय में महिलाओं को पारंपरिक ज्ञान है। उनके द्वारा घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वनों का सघन भ्रमण किया जाता रहा है, उनको वनों के संरक्षण, संवर्धन एवं सीमित दोहन का पूर्ण ज्ञान है। मध्यप्रदेश में वनों के प्रबन्धन में इनकी भूमिका की सकारात्मकता को आंकते हुए इन्हें लघु वनोपज समिति एवं वन समितियों में प्राथमिकता देने का प्रयास किया गया है साथ ही वनोपज प्राथमिक समितियों में 33 प्रतिशत एवं वन सुरक्षा तथा ग्राम वन समितियों में 50 प्रतिशत तक स्थान दिया गया है। वन विभाग द्वारा संचालित रोपणियों के संचालन में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इनके अतिरिक्त कई वन, वधर्निक, वानिकी कार्यों में महिलाओं को प्रोत्साहित किया जाता है। इस प्रकार वनों के प्रबंधन में उनकी क्षमता वृद्धि कर लैंगिक समानता हासिल करते हुए महिलाओं का सशक्तिकरण किया जा रहा है। यदि आवश्यक हो तो इस व्यवस्था को और सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

लक्ष्य–06 सभी के लिए जल और स्वच्छता की उपलब्धता और सतत् प्रबंधन सुनिश्चित करना।

वनों द्वारा अपने प्रभाव के क्षेत्र में जल धाराओं को सतत्ता एवं निरंतरता प्रदान की जाती है। वनों की बाढ़ नियंत्रण में भूमिका होती है। इसी प्रकार घास के मैदान भी जल ग्राह्यता बढ़ाने में सहायक होते हैं। वनों द्वारा जल में प्रवाहित होने वाले प्रदूषण को भी अवशोषित कर जल की गुणवत्ता वृद्धि में सहायता की जाती है। कुशल वन प्रबंधन के माध्यम से जल के स्रोतों को सुरक्षित कर जल की निरंतरता तथा शुद्धता बढ़ाने का प्रयास किया जाता है।

लक्ष्य–07 सभी के लिए किफायती, भरोसेमन्द, सतत् और आधुनिक ऊर्जा की उपलब्धता और सतत् प्रबन्ध सुनिश्चित करना।

इस लक्ष्य का सीधा संबंध वनों से संबंधित नहीं किन्तु सुदूर वन क्षेत्रों में जहाँ पर पहाड़ी क्षेत्रों में हवाएं चलती हैं वहां पर विंड एनर्जी का प्रयास किया जा सकता है। इसी प्रकार दूरस्थ वनों में सौर उर्जा के संयंत्र लगाये जा सकते हैं।

लक्ष्य–08 सभी के लिये सतत् समावेशी और संधारणीय आर्थिक विकास, पूर्ण और लाभकारी रोजगार और उचित कार्य को बढ़ावा देना।

वनों के प्रबंधन के माध्यम से स्थानीय लोगों के लिए विभिन्न प्रकार का रोजगार उपलब्ध कराया जाता है। वनों के प्रबंधन संरक्षण, वन्य जीव प्रबंधन, वन वर्धनिक प्रोसेसिंग में विभिन्न प्रकार के कार्य, विभिन्न श्रेणियों यथा अकुशल, अर्द्ध कुशल के रोजगार के अवसर होते हैं। इन रोजगारों को प्रदान किये जा सकते हैं। यह एक ओर तो ग्रामीणों को रोजगार देगा साथ ही उनके पलायन पर रोक लगायेगा। वनों के प्रबंधन से वन आधारित उद्योग तथा वन से जुड़े अन्य विभाग जैसे पशुपालन, डेयरी, मछली पालन, रेशम, कोसा इत्यादि के पालन में भी सहायता प्राप्त होती है। इस प्रकार स्थानीय क्षेत्रों के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

लक्ष्य–09 समुत्थानशील अवसंरचना का निर्माण करना, समोशी और संधारणीय औद्योगिकरण को बढ़ावा देना और नवोन्मेश को प्रोत्साहित करना।

वनों द्वारा प्रदान की गयी हरित आवरण एवं हरित संरचना काफी लचीली होती है साथ में विभिन्न प्रकार के समुदायों के लिए जीविकोपार्जन का साधन होती है। वेट लैण्ड इको सिस्टम बाढ़ के रोकथाम में सहायक होता है। इसके अतिरिक्त शहरों में हरित आवरण, जल संरचनाओं का संरक्षण करने एवं प्रदूषण को रोकने में सहायता होता है। इसके अतिरिक्त शहर एवं नगर में हरित पट्टी तापमान के नियंत्रण में सहायता होती है।

लक्ष्य–10 शहरों और मानव बस्तियों को समावेशी, सुरक्षित, समुत्थानशील और संधारणीय बनाना।

वनों द्वारा प्रदाय की जाने वाली हरित पट्टियाँ शहरों एवं नगरों में विभिन्न प्रकार के भोज्य पदार्थ, ईंधन औषधियाँ तथा अन्य उपयोगी वस्तुएं प्रदान करती हैं। यह लोगों के जीवन यापन में सहायता करती है। शहरों एवं नगरों की बस्तियों तथा उनके जीवनयापन के सरल बनाने में सहायक होते हैं।

लक्ष्य–11 सतत् उपभोग और उत्पादन पैटर्न सुनिश्चित करना।

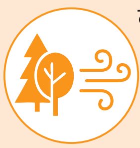

वनों का विनाशविहिन विदोहन सीमित एवं आवश्यक उपयोग को प्रेरित करता है। वन क्षेत्रों में पाये जाने वाले विभिन्न प्राकृतिक संसाधन तथा वहां के निवासी ऐ चक्र से जुड़े रहते हैं जो प्राकृतिक संसाधनों का सीमित एवं आवश्यक उपयोग को बढ़ावा देता है। इसके सीमित उपयोग के साथ–साथ जल एवं शुद्ध वायु प्राप्त होती है तथा भूमि कटाव की रोकथाम होती है जो कि कृषि विकास में भी सहायता होती है। संयुक्त वन प्रबंधन एवं सामुदायिक वन प्रबंधन के माध्यम से वनों का प्रबंधन प्रदेश के विकास में अपनी अग्रणी भूमिका का निर्वाहन कर सकता है तथा उनके आसपास रहने वालों की आर्थिक स्थिति में बदलाव होने की प्रबल संभावना है।

लक्ष्य–12 जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभावों से निपटने के लिए तात्कालिक कार्रवाई करना।

सघन वन, विरल वन, चारागाह तथा वेट लैण्ड आदि के बेहतर प्रबंध से हम कम लागत से जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम कर सकते हैं। वन आजीविका, भोज्य पदार्थ, चिकित्सा, रोजगार, जल संवर्धन, तापमान नियंत्रण कर पारिस्थिकीय तंत्र को स्थायित्व प्रदान करने की क्षमता रखता है। अत: कुषल वन प्रबंधन से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम कर सकता है।

लक्ष्य–13 सतत् विकास के लिए, महासागरों, समुद्रों और समुद्रीय संसाधनों का संरक्षण करना और इनका संधारणीय तरीके से उपयोग करना।

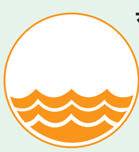

यद्यपि यह लक्ष्य समुद्री क्षेत्र हेतु है किन्तु फिर भी म.प्र. के वनों में जल के अंदर रहने वाली प्रजातियां (प्राणी एवं पौधे) सीमित मात्रा में हैं किन्तु दलदली क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां एवं प्राणी पाये जाते हैं इन प्रजातियों का जल के प्रदूषण नियंत्रण तथा स्थानीय समुदाय के भोजन तथा आजीविका में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान की जाती है। इनके प्रबंधन से इस लक्ष्य को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

लक्ष्य–14 सतत् विकास के लिए शांतिपूर्ण और समावेशी सोसाइटियों को बढ़ावा देना, सभी को न्याय उपलब्ध कराना तथा सभी स्तरों पर कारगर, जवाबदेह और समासेशी संस्थाओं का निर्माण करना।

यद्यपि यह लक्ष्य समग्रता लिये हुए है किन्तु सीमित क्षेत्र में वनों के आसपास रहने वाले समुदाय वनों की विभिन्न उपयोगिता के कारण संसाधनों के उपयोग में होने वाले झगड़ों को बेहतर प्रबंधन के माध्यम से प्रबंधन निपटाया जा सकता है। इनमें उनकी भागीदारी सुनिश्चित करके उनको न्याय के सिद्धान्तों पर चलने हेतु प्रेरित किया जा सकता है। इससे समाज में स्थानीय रूप से कई आदर्श संस्थाओं का निर्माण हो सकता है।

लक्ष्य-15 राष्ट्रों के अंदर और उनके बीच असमानता को कम करना।

इसका सीधा संबंध वनों से नहीं हैं किन्तु विभिन्न आयामों को देखने से इस लक्ष्य की प्राप्ति में भी सहायक होता है।

लक्ष्य-16 स्थलीय पारिस्थितिकी-तंत्रों का संरक्षण और पुररूद्धार करना और इनके सतत् उपयोग का बढ़ावा देना, वनों का सतत् तरीके से प्रबंधन करना, मरुस्थल-रोधी उपाय करना, भूमि अवक्रमण को रोकना और परिवर्तित करना और जैव-विविधता की हानि को रोकना। वनों में विभिन्न प्रकार के जैवविविधता होती है जिनका पर्यावरण पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। उसके कुशल प्रबंधन तथा उनके संवहनीय उपयोग से क्षेत्र की स्थिति में निरंतर वृद्धि की जा सकती है तथा पारिस्थितिक तंत्र को मजबूत बनाया जा सकता है। म.प्र. में साल, सागौन, मिश्रित वन (खैर, सलई करघई धावड़ा) विभिन्न प्रकार के औषधीय वृक्ष एवं अन्य वनस्पतियां आदि के संरक्षण से जैव विविधता का संरक्षण होगा। इसके अतिरिक्त भूमि जल भी सुरक्षित होगा तथा तापतान भी नियंत्रित रहेगा। साथ ही विभिन्न प्रकार के वन्य प्राणी, पक्षी एवं अन्य जीव के संरक्षण से पारिस्थितिकीय तंत्र को मजबूत बनाती है जो पर्यावरण संतुलन के लिए आवश्यक है।

लक्ष्य-17 कार्यान्वयन के उपायों का सुदृढ़ीकरण करना और सतत् विकास के लिए वैश्विक भागीदारी का पुनरुद्धार करना।

वनों के प्रबंधन में राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर पर भागीदारी की संभावनाएं होती हैं। इसमें ज्ञान, प्रबंधन तकनीक, का आदान-प्रदान एवं दक्षता निर्माण के विषय लिये जा सकते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वन प्रबंधन सतत् विकास लक्ष्यों से किस प्रकार जुड़ा है। म.प्र. में पूर्व में भी विभिन्न प्रकार की योजनाएं जैसे कि World Forestry Project (विश्व वानिकी परियोजना) UNDP Livelihood Project, UNDP Community Conserved Resource, BUCCRLIP योजना, वन ग्राम विकास योजना, आदि लागू की गई थी जो सतत् विकास में सहायक रही है। वर्तमान में भी वन विभाग की वन प्रबंधन की विभिन्न गतिविधियों से सतत् विकास के लक्ष्यों को बड़ी कुशलता के साथ प्राप्त किया जा सकता है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु हमें विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की क्षमता वृद्धि को जानना आवश्यक है। अधिकारियों के प्रशिक्षण देश एवं प्रदेश के विभिन्न संस्थाओं में होते रहते हैं जिनमें इन विषयों को सम्मिलित किया जा सकता है। कर्मचारियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम निम्नानुसार रखा जा सकता है:-

1. वन विद्यालय में वन रक्षक/वन पाल प्रशिक्षण में क्रमश: एक सप्ताह एक दिन का प्रशिक्षण/चर्चा करके।
2. क्षेत्रीय अधिकारियों/क्षेत्रीय कर्मचारियों को विभाग के वित्तीय स्रोतों से एक दिवसीय कार्यशाला।
3. वनवृत्त स्तर पर एक दिवसीय कार्यशाला के माध्यम से।
4. भोपाल स्तर पर एक मुख्य वन संरक्षक सम्मेलन में एक सत्र सतत् विकास लक्ष्य पर।

इस प्रकार वन विभाग द्वारा वनों में प्रबंधन से सतत् विकास लक्ष्य-2030 तक निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

भूल सुधार

मध्यप्रदेश वनांचल सन्देश माह अप्रैल से जून में पेज क्रमांक 18 में प्रकाशित टिप्पणी एस.एफ. आर.आई. द्वारा बाघों की पुन: स्थापना त्रुटिवश प्रकाशित टिप्पणी में सुधार करते हुए इसका शीर्षक नौरादेही वन्य जीव अभ्यारण्य में पुन: स्थापित किये गए (Tiger Re & introduction) बाघों की राज्य वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर द्वारा रेडियो कॉलरिंग एवं निगरानी पढ़ा जाए। मध्यप्रदेश वन विभाग, वन्य प्राणी शाखा द्वारा राज्य वन अनुसन्धान संस्थान जबलपुर को केवल निगरानी का कार्य सौपा गया है। तदानुसार संस्थान द्वारा निगरानी का कार्य को निरंतर किया जा रहा है।

Most of the Photographs are taken by staff of Madhya Pradesh Forest Department and Photographs which belong to others are captioned as name of the owner below the photographs. We are sincearly thankful to all.

मेरी कब्र पर आकर कभी, आँसू ना बहाना।
मै यहाँ रहता नहीं,
मै कभी सोता नहीं,
मुझे है इसका यकीं
तुम्हे परवाह है मेरी।
मुझे है इसका विश्वास,
मेरा इंतजार करते होंगे,
मेरे पौधे,
मेरे परिंदे,
मेरे जंगल,
मेरे पर्वत,
मेरे मिटटी।
कभी तुम वहाँ जाना,
उन्हे सहलाना,
दुलारना,
पानी पिलाना,
और मुझे याद आना।
मेरी कब्र पर आकर कभी, आँसू ना बहाना।

MP TIGER FOUNDATION SOCIETY

11 सितम्बर
वन शहीद दिवस

मैरी एलिज़ाबेथ फ्राये की
कविता से प्रेरित

बोरगाँव रोपणी खण्डवा अनुसंधान विस्तार वृत्त

Madhya Pradesh Forest Department
Satpura Bhawan, Bhopal-462004
mpforest.gov.in